ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ का मुख पत्र | मार्च - अप्रैल २०१७

आर्य सेवक

आर्य समाज नियम ६ – संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है :– यह पुरुषार्थ

श्री ओमप्रकाश (मुन्ना) यादव, अध्यक्ष, महाराष्ट्र इमारत व इतर बांधकाम कामगार कल्याणकारी मंडल, राज्यमंत्री दर्जा प्राप्त की अध्यक्षता में बेसहारा कन्याओं का सामुहिक विवाह आर्य समाज, हंसापुरी मे संम्पन्न।

सभा कार्यालय - दयानन्द भवन, मंगलवारी बाजार, सदर, नागपुर (महाराष्ट्र)

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के कोषाध्यक्ष

यशपाल जानवानी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के यशस्वी कोषाध्यक्ष का अचानक हृदयगति से निधन हो गया। वे जहाँ अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड गये, वहीं सभा के परिवार को भी एक ईमानदार व आर्य जगत को विद्वान कर्मयोगी की कमी हमेशा खलती रहेगी। आर्य समाज-हंसापुरी में उनकी मृत आत्मा की शांति हेतु आयोजित यज्ञ में अपने विचारों को प्रकट करते हुऐ, कहा कि श्री यशपाल नत्थुरामजी जानवानी-नांदुरा आर्य समाज में प्रधान थे, वे एक अच्छे व्यवसायी के साथ-साथ सफल कृषक भी थे। आप नांदुरा नगरपालिका की समितियों के सभापती भी रहे व जनहित में सहकारी आंदोलन का नेतृत्व कर सहकारीता को आगे बढाया। आप आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ की छत्तिसगढ स्थित तुलाराम भू-संम्पत्ती के ग्रामःढाबा व अन्य क्षेत्र के अधिष्ठता रहे तथा आर्य समाज के सोलह संस्कारों को जनहित में निःशुल्क करते रहे । तथा सभा के विभिन्न पदों को सुशोभित करते हुये वे सभा के कोषाध्यक्ष का भार संभाल रहे थे ऐसे मे उनका हमारे से बिछुड जाना आर्य समाज व सभा के लिये एक दुःखद घटना है।

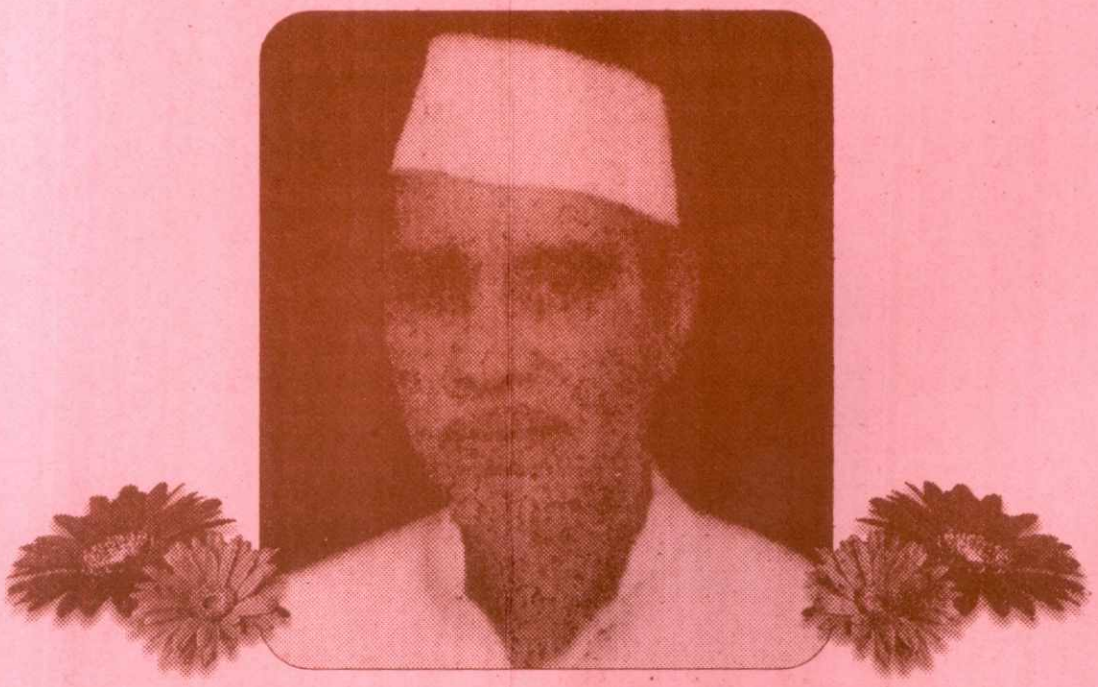

आर्य जगत के समस्त पदाधिकारियों-सदस्यों ने उन्हे भाव-पूर्ण श्रद्धांजली अर्पित की।

ओ३म्

आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ का मुखपत्र

वर्ष - ११६ अंक १३
सृष्टि संवत १९६०८५३११७
दयानन्दाब्द - १९२
संवत - २०७३
सन् २०१६ सितम्बर-अक्टुबर

प्रधान
पं. सत्यवीर शास्त्री, अमरावती
मो.नं. ०९४२२१५५८३६

मंत्री एवं प्रबंधक सम्पादक
अशोक यादव
मो. ०९३७३१२११६३

सम्पादक एवं उपप्रधान
जयसिंह गायकवाड़, जबलपुर
मो. ०९४२४६८५०९१
e-mail : jasysinghgaekwad@gmail.com
निवास - ५८०, गुप्तेश्वर वार्ड,
कृपाल चौक, मदन महल, जबलपुर

सह सम्पादक
प्रा. अनिल शर्मा, नागपुर
मो. ९३७३१२११६४
मनोज शर्मा
मो. ९५६१०७९८९४

कार्यालय पता :
दयानन्द भवन, मंगलवारी बाजार,
सदर, नागपुर-४४०००१ महाराष्ट्र
दूरभाष क्र. ०७१२-२५९५५५६

अनुक्रमणिका

क्र.	लेख	लेखक	पृष्ठ क्र.
१.	आर्य वेदोक्त	डॉ. विजेन्द्र पाल सिंह	२-३
२.	आवश्यक सुचना व कार्यालय आदेश	प्रधान	३
३.	ईश्वरकृपयात्र कुशलं तत्रापि भवतु।	ज्ञानेश्वरार्य	४-५
४.	शोक समाचार	प्रधान	५
५.	युवति-विकास शिबीर	मंत्री	५
६.	भजन	शकुंन्तला शास्त्री गणगणे	६
७.	कन्या भ्रूण हत्या	शकुंन्तला शास्त्री गणगणे	६
८.	मंन्त्र विचार	शकुंन्तला शास्त्री गणगणे	७
९.	अद्भुत गुरुदक्षिणा मांगना		८-११
१०.	अंन्तरिक्ष अपने भीतर भी है	डॉ. सम्पुर्णानन्द	१२
११.	जिंदगी	चंन्द्रसेन विराट	१२
१२.	समाचार बोधोत्सव		१३
१३.	आर्य समाज बेलखेड		१४-१५
१४.	भारतवर्ष भ्रष्टाचारियों का देश	पं. उम्मेदसिंह विशारद	१६-१७
१५.	एतरेय उपनिषद् से मनुष्य शरीर		१८
१६.	निवेदन		१८
१७.	मूलशंकर सच्चे शिव कि तलाश	डॉ. निजोद पाल	१९-२०
१८.	धार्मिक और सामाजिक चेतना के महानायक	महेशचंद्र माथुर	२०

== 000 ==

टीप - प्रकाशित कृतियों में व्यक्ति विचार लेखकों के हैं इनसे आर्य सेवक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आर्य धर्म वेदोक्त है

आर्य धर्म की मान्यता से वेदोक्त है जब कि पौराणिकों की मान्यताऐं वेद विरुद्ध है वेद का आचरण करने से ही इसे वैदिक धर्म कहा जाता है आइए वैदिक धर्म व पौराणिक मत पर एक द्रष्टि दौडाते है

पौराणिक मतावलम्बी मूर्ति पूजा करते है यह मूर्तियाँ मृतिका, पाषाण, ताम्र, लौह, अष्टधातू की निर्मित होती हैं तथा अम्बे, संतोषी, लक्ष्मी, गणेश, पार्वती, शिवजी, राम, कृष्ण, विष्णु, हनुमान, काली, दुर्गा, सरस्वती, आदि सहस्त्रो देवताओं की होती है।

इसके विपरीत आर्य धर्म को मानने वाले मूर्ति पूजा नही करते न ही अनेक देवी देवता व अवतारों को मानते है आर्यो के अनुसार सृष्टी का रचनाकार परमेश्वर एक ही है जो सर्व शक्तिमान है, निराकार है, सर्वव्यापक है, उसकी कोई मूर्ति नहीं, न जन्म लेता न मरता, उसे जन्म लेने की आवश्यकता ही नहीं, वह सर्व व्यापक व सर्वशक्तिमान हो कर ही सृष्टी को चला रहा है दूसरे उसे कर्मो का फल नही भोगना हो, वह तो सत्य चेतन व आनंद स्वरुप है।

पौराणिक भाई पूजा करते है गणेश शिव आदि की प्रतिमाओं को स्नान कराते, उन्हें वस्त्र पहनाते, श्रुंगार करते, उनकी आरती करते है, उनका कीर्तन करते है, प्रतिमाओं को नदी में विसर्जन करते है।

रात्रि जागरण करते है रात भर मूर्तियो के आगे नाचते कूदते शोर करते है, न सोते न सोने देते है, उसमें शिव पार्वती या हरिशचंद्र तारामती की छिपकली बनने की कहानी रात भर सुनाते अधिकांश मद्य भांग आदि पी कर नशा करते है झूमते व गाते है, लेट कर शिव मंदिर तक सरकते हुये जाते है।

अनेक पौराणिक व्रत रखते व मन्दिरों मे नैवेद्य फल मूल चढाते है, तथा अनेक जन गंगा स्नान कर सूर्य को जल देते है।

केदारनाथ, बद्रीनाथ, मथुरा काशी अयोध्या व गोवर्धन को जा वहाँ उनकी परिक्रमा करते है पशुपति नाथ आदि जाते है। अनेक पौराणिक कैलाश पर्वत पर जाते है। बर्फानी बाबा पर जाते वहाँ पूजा करते हैं। अनेक वैष्णो देवी, बालाजी, खाटू बाबा के मंदिर, मन्सा देवी, पूर्णा देवी, रामेश्वर, जगन्नाथ जाते है मंदिरो में स्थापित मूर्तियाँ के दर्शन मात्र से ही अपना उद्धार मानते है।

अधिकांशतः घरों में राम चरित्र मानस का पाठ कराते हैं। कलावती की कथा कराते है। संतोषी की कथा कराते हैं। कही कही पौराणिक गेरुये वस्त्र धारी पेड पर उल्टे लटकते हैं। गड्डा खोद कर उनमें अपने आप को गर्दन तक गाढ लेते है। अग्नि जला कर मध्य में खाली स्थान में बैठे या खडे होने को ही भक्ति समझते व करते है कोई काई एक टांग पर खडे रहने को तपस्या मानता व करता है, अनेक तांत्रिक कर्म करते कराते है। झाड फूंक करते फिरते है। श्मसानों से हड्डियाला उन्हे झाड फूंक में प्रयोग करते है और लोगों के भूत प्रेत ऊपर का व नीचे का चक्कर बटा उतारते फिरते है। यही नही पौराणिक में इस प्रकार के कुकत्यॉ की पूजा के नाम पर भरमार है। यहॉ पौराणिक लोग जब मद्य पान करते है, तब राम का नाम ले कर, मद्य से भरे गिलासों को एक दूसरे से स्पर्श कराते तब उसे पीते हैं। धूम्रपान करने वाले भी, पाय :हाथ में बीडी सिगरेट ले कर मुँह से पीते व धुऑ निकालते है। तथा एक दूसरे से राम राम जी कह कर अभिवादन करते है। इस प्रकार से वह राम का नाम ले कर राम के चरित्र पर कीचड का काम ही करते है। रामपुर्णतः सात्वीक थे, ब्रम्हचारी थे सत्यनिष्ठ थे कर्तव्य पालक थे, श्रेष्ठ थे, मर्यादा पालक थे, आज व्याभीचारी मद्यपानी कामुक लोगों के मुँह से राम का नाम लेना राम का अपमान ही है। आर्य समाज राम के आदर्शो का पालन करने की प्रेरणा देता है, तथा राम व कृष्ण के चित्र के स्थान पर चरित्र की पूजा (आचरण) करने पर बल देता है।

पौराणिकोंने देवी देवताओं के नाम पर महापुरुषों के जीवन चरित्र पर कीचड उछाली है, उनका नाम ले कर धूम्रपान मद्य पान बलि प्रथा समाज पर कलंक है। पौराणिक लोग गले में कण्ठी माला रुद्राक्ष माथे पर बडा तिलक चंन्दन लगाते रुद्राक्ष की माला भी पहनते है, इससे वह समझते है कि कोई बाधा व मुसीबत नहीं आयेगी और रुद्राक्ष आदि से रक्षा हो सकेगी। यहाँ तक कि बच्चों को उठा कर उनकी काली दुर्गा आदि की मूर्तियॉ मंदिरो मे हत्या कर बलि तक दी जाती है जिव्हाँ काट कर काली व भैरो की मूर्ति पर चढा दी जाती है। उनका मानना है इससे देवी देवता प्रसन्न होगें।

भारत में ही नही विश्व के अनेक भागों मे पूजा के नाम पर पाखंड है, कुकृत्य है, और यह पूजा नही अन्ध विश्वास है, आपराधिक कृत्य है, आर्य समाज इन का विरोध करता है तो अंधविश्वास व पाखंडी से दूर रहने को कहता है यह और कुछ नही अर्पित अज्ञानता है अज्ञानता सभी

कार है इसका निवारन करना सभी आर्यों का दायित्व है।

आर्य धर्म केवल एक ईश्वर की ही उपासना करने कहता है, वह ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरुप निराकार व्यापक सर्व शक्ति मान, अनादि अनन्त अजन्मा, अजर मर है। उसी की उपासना करनी चाहिए।

राम, कृष्ण, अर्जुन, रघ दिलीप भतृहरि याज्ञवहक्य म कजाद वशिष्ट विश्वामित्र सभी आर्य थे, और संध्या उपासना अग्नि होम ही करते थे। मूर्तिपूजा तो जैनी व बौध्यों के मत से आरंभ हुयी इससे पूर्व यज्ञशालाओं में यज्ञ ही होते थे लोग घरो में यज्ञ करते थे संध्या उपासना करते थे आज भी आर्य समाज वेद का इसी लिए प्रचार करता है जिससे व्यक्ति सत्य को समझ सके।

डॉ. बिजेंन्द्र पाल सिंह
चन्द्र लोक कॉलोनी, खुर्जा

.....***.....

- आवश्यक सूचना व कार्यालय आदेश -

(समस्त संबमद्ध आर्य समाज को डाक द्वारा प्रेषित)

विषय : आपका प्रति वर्ष के वार्षिक वृत्तांत प्राप्त न ो के संबंध में।

संदर्भ : इस कार्यालय के पत्र दिनांक १३/२/०९, ०/४/१०, २१/४/११, ४/१/१२, २७/३/१२, ०/११/१२, १०/४/१४, २०/११/१४, १५/१२/१४, /०४/२०१५, १४/१२/१६ तथा सभा का मुख्यपत्र र्य- सेवक दिसंबर-जनवरी २०१५ अंक मे वार्षिक वृत्तांत ेषिष्ट फार्म, सुचना व प्रार्थना. संम्पादकीय में त्मावलोकन प्रकाशित कर निवेदन।

ोदय,

उपरोक्त संदर्भित पत्रो व प्रकाशन के माध्यम से चित करने के बाद भी आपका वार्षिक वृत्तांत प्राप्त नही आ है।

जैसा कि आपको विदित है व सभा कि धर्मादाय ायुक्त मे पंजिकृत नियमों के अध्याय तृतीय निर्माण वस्था संख्या ७ के अनुसार सभा का निर्माण होता है. सके आप एक प्रमुख अंग है। सभा कि नियमावली व र्य समाज कि नियमावली से आप अवगत है इसलिए पने कर्तव्यों के निर्वा हेतु सदा उद्दत रहना आपका परम र्म है।

आपको पहले भी सुचित किया जा चुका है कि र्मादाय आयुक्त- नागपुर के आदेश दिनांक ०/०७/२०११ द्वारा ईटारसी मे संपन्न असंतुष्टो की चेंज पोर्ट को खारिज कर देने के बाद उनके द्वारा बार-बार लिये ये चुनावो का कोई वैधानिक आधार नही है, वे मात्र सभा ा अहित कर रहे है अतएव वर्तमान मे एक ही सभा जिसके स्टी प्रधान पं. सत्यवीर जी शास्त्री है उन्ही के आधिन वैधानिक सभा कार्यरत है जिसका रिकार्ड धर्मादाय आयुक्त के इन्सपैक्टर द्वारा जांच किया गया. असत्य जानकारी के चलते हमसे रुठ कर गए आर्य समाजो व असंतुष्टो से घर वापसी की प्रार्थना कि है, अतएव आप मुख्य धारा से जुडकर, सभा के निर्माण मे आने वाले त्रैवार्षिक चुनाव मे हिस्सा लेकर आर्य समाज के हित मे, सभा कि छत्तिसगढ स्थित अरबो रुपयों कि भुमि की रक्षा के लिए, सभा को मजबुती प्रदान कर आर्य समाज से ईर्ष्या, द्वेष, मतभेद-मनभेद, अभिमान को त्याग कर पुनः स्वर्णिम दिशा मे ले जाने का सत्य व सार्थक वैधानिक प्रयास करेगें, ऐसी आपसे प्रार्थना है।

- कार्यालय आदेश -

आपको आदेश दिया जाता है कि आप अपने समाज की चित्रावली, दशांश, लेखा-जोखा, १५ दिनों के अंदर प.सत्यवीर शास्त्री-प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ, सदर, नागपुर-४४०००१ (महाराष्ट्र) के पते पर भेज दे, साथ हि पूर्व मे अगर आपने असंतुष्ट गुट को चित्रावली, दशांश, लेखा-जोखा दिया होंगा तो उसकी ऑफिस कापी की फोटो प्रत पर स्टॅम्प लगाकर आपके हस्ताक्षर से प्रमाणित कर पंजिकृत डाक से भेजे ताकि सभा की ऑडिट रिपोर्ट मे उसे सम्मलित कर मा. धर्मादाय आयुक्त कार्यालय मे जमा किया जा सके।

श्येडूल प्रधान पं. सत्यवीर जी शास्त्री के आदेश से प्रेषित।

दिनांक : २७/०४/२०१७

(पं. सत्यवीर जी शास्त्री) (अशोक यादव)
आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

"।। ओ३म् ।।"

समादरणीय श्री युत... सादर नमस्ते ।

ईश्वरकृपयात्र कुशलं तत्रापि भवतु ।

* स्वामी सत्यपति जी मेरे गुरु है, उनसे मैने योग, दर्शन, उपनिषद विधाएँ पढी, जीवन को श्रेय मार्ग पर चलाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया, उनके सानिध्य में सैकडों ध्यान शिविर लगाये, अध्यापन किया। पिछलें १६ वर्षों से युरोप, आफ्रिका, एशिया, अमेरिका आदि देशों में वैदिक धर्म प्रचारार्थ प्रतिवर्ष जा रहा हूँ। इस वर्ष USA में अधिक समय लगाया। इस देश में भारत से आये हजारों की संख्या में उच्च शिक्षा प्राप्त, धार्मिक आध्यात्मिक संस्कारों से युक्त युवा, विश्व की प्रसिद्ध कम्पनियों में महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत है। इस बार USA की सिली कोन SANTOS वेली देखने का अवसर मिला जिसमें गूगल, माइक्रोसोफ्ट, ऍपल, आदि अनेक विशिष्ट संस्थान स्थित है जो समस्त विश्व को अपने में समेटे हुवे है। इन सब को देखने के बाद दुःख मिश्रित सुख मिला। काश इन प्रबुद्ध युवकों को भारत में ही ऐसा कार्य करने का अवसर मिला होता!

आज अमेरिका आदि पाश्चात्य देश अपनी संम्पत्ति, ऐश्वर्य, शक्ति, बुद्धि के कारण संम्पूर्ण विश्व पर अपना वर्चस्व बनायें हुवे है, इसका कारण इन लोंगो की दूरदर्शिता, राष्ट्र भक्ति, परस्पर संगठन, श्रद्धा प्रेम, विश्वास, सहयोग है। उत्साह, साहस, पराक्रम अनुशासन, आगे बढने की उत्कट इच्छा, कार्य कुशलता आदि गुण है। प्राकृतिक संसाधनों की खोज करके उनका समुचित, व्यवस्थित रुप में सदुपयोग करना इनकी विशेषता है। भूमि, धन, सम्पत्ति, सोना, चांदी, हीरे-मोती आदि ऐश्वर्य प्राप्त कराने वाले पदार्थों की खोज में अपने प्रदेशों से निकल पडे। नितान्त बीहड जंगलो, पर्वतों, पठारों, मरु-स्थलों, नदियों, समुद्रो में मासों वर्षों तक सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास, आंधी, तुफान, आदि अत्यन्त प्रतिकूलताओं को सहन करते हुवे, यहाँ तक कि मृत्यु से प्रतिपल जुझते हुवे, नये नये प्रदेशों को ढूंढा, वहाँ के लोगों से युद्ध किया। उनको भगाया मारा और अपना साम्राज्य स्थापित किया। वही के अधिकारी-स्वामी बन बैठे।

संसार में एक नियम प्रसिद्ध है "जिसे योग्य तम की जीत नाम से जाना जाता है। इसका भावार्थ यह है कि जो सशक्त, समर्थ, साहसी, सा-धन सम्पन्न है वह विजयी होता है, और जो निर्बल, निर्बुद्धि, भीरु, कायर, रोगी, असंगठित है । वह पराजित होता है। महाभारत के युद्ध के हजारो-वर्षो बाद तक यह आर्यावर्त सोने की चिडिया पारस मणि "विश्व गुरु" कहलाने वाला देश अंधविश्वास, पाखण्ड, अहंकार, ईर्ष्या-द्वेष, विघटन, निर्बलता, जडपूजा आदि भयंकर रोगों से ग्रस्त हो गया। परिणाम स्वरुप विदेशी आक्रान्ताओं ने इस पर लगातार आक्रमण किये। इतिहास बताता है कि कुछ तो आक्रान्ता इतने क्रूर, आसुरी, पैशाचिक वृत्ति वाले थे जिनके अत्याचारों को पढ, सुन जानकार हृदय कॉप जाता है, शरीर रोमांचित हो जाती है, मन में आक्रोश, विद्वेष, प्रतिशोध की भावना बन जाता है। उनमें से गजनी, चंगेज, खिलजी, नादिर, तैमूर, कासीम, सिकंदर आदि के नाम प्रसिद्ध है, किन्तु आज इनके नाम तथा इतिहास को नितान्त हटा दिया गया है।

किसी भी में दीर्घ कालीन, शान्ति, सुख, ऐश्वर्य मनुष्यों को अकर्मण्य, आलसी, प्रमादी, अहंकारी, स्वेच्छाचारी, कुव्यसनी बना देते है। इन्ही न्युनताओं, दोषों के कारण भारत पर सैकडों वर्षो तक शकों, हुणों, मुगलों, पठानों, तुर्कों, आदि के आक्रमण होते रहे, सम्पत्ति लूट कर ले जाते रहे, बाद में ये लोग, यही रह कर राजा बन गये। इन्ही विदेशी आकान्ताओंकी पराधानता, अन्याय, अत्याचार, अपमान, शोषन, घृणा, पक्षपात पूर्वक क्रूर व्यवहार के कारण भारतीयों की अस्मिता, स्वाभिमान, गौरव, शौर्य, उत्साह, साहस, पराक्रम, आदि विशिष्ट गुण दब गये, नष्ट हो गये, विस्मृत हो गये और परिणाम स्वरुप भारतीयों में कायरता, भीरुता, झूठ, छल, कपट, स्वार्थ, विश्वासघात, अकर्मण्यता, धोखा, रिश्वत, अंध विश्वास, जड पूजा, व्यक्ति पूजा आदि दुर्गण उत्पन्न हो गये जो आज तक पराम्परा से चले आ रहे है यह सब गुलामी के प्रभाव और परिणामों से हुआ। इसी कारण आज सारे विश्व में भारत की अस्मिता, वर्चस्व, महत्ता, कीर्ति, प्रतिष्ठा सब समाप्त प्रायः हो गये है। इतना होने पर भी हम सतर्क सावधान नही हो पा रहे है।

ये आसुरी शक्तियां आज सीरिया या अफगानिस्तान में ही नही है बल्कि देश के प्रत्येक प्रान्त व नगर में भी छिपी बैठी है। यदि हम इनको नष्ट करने के लिए योजनाएँ नही बनाएँगे, संगठित होकर तन-मन-धन का

त्याग नहीं करेंगे, सब प्रकार के साधनों का संग्रह करके प्राणों की बाजी लगाकर इन आतंकवादियों को नष्ट करने का दृढ संकल्प नहीं लेंगे ता जो ७००-८०० वर्षो तक हमारे पूर्वजों की दुदर्शा हुई वही सहन करने को तैयार हो जावे। यदि सूक्ष्मता से देखा जाये तो यह प्रतीत होगा कि हम वैदिक दृष्टि से पूर्ण स्वतंत्र हुवे ही नही है। स्वतंत्रता, संविधान, नीति, विधि-विधान, व्यवस्था, प्रबन्ध, शिक्षा, न्याय, दण्ड आदि अभी तक अपूर्ण है। इन सब मे परिवर्तन, परिशोधन,परिवर्तन अभी अपेक्षित है। विवाह का अधिकार, सन्तान उत्पत्ति की संख्या मत देने तथा राज्यधिकारी बनने की पात्रता, कर्मकाण्डों का औचित्य, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमा, हिंसा की परिभाषा राष्ट्रभावना, शिष्टता, भद्रता, नैतिकता, सामाजिकता, नागरिकता का स्पष्टिकरण, इत्यादि अनेक महत्वपूर्ण विषय है, जिन पर गंभीरता से चिन्तन करना अतिआवश्यक है।

हे प्रभो। वैदिक विश्व चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना हेतु अब तो माताओं के गर्भो में दिव्य आत्माओं को जन्म धारण कराओ जो गुरुकुलों में जाकर शूरवीर, मेधावी, साहसी, पराक्रमी, वैदिक, वाङ्मय के प्रकाण्ड विद्वान बनकर देश-विदेश में अज्ञान अंधकार में भटकते हुये मानवों को वेद ज्ञान का प्रकाश करें, जिससे सारा विश्व सुख शान्ति, समृद्धि प्रेम से परिपूर्ण हो जाये। हे देव यह गुरुत्तम कार्य आपकी सहायता प्रेरणा के विना असंभव है अतःहमे तो आप पर ही पूर्ण भरोसा है आप ही अपनी कृपा से यह कार्य संम्पन्न करायेंगें इसी भावना, श्रद्धा, विश्वास, व आशा के साथ

आपका

ज्ञानेश्वरार्यः

.....***.....

शोक-समाचार

महाराजपुरः

आर्यसमाज के कर्णधार मध्यप्रदेश विदर्भ के आधार स्तंभ लोकप्रिय आर्यनेता श्री. जयनारायणजी आर्य के पिता लक्ष्मी नारायणजी (आर्य) चौरसिया जी का स्वर्गवास मार्च माह में हुआ।

उनका "अत्योष्टि संस्कार" पूर्ण वैदिक विधि से वैदिक विद्वानों द्वारा किया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज महाराजपुर-छतरपुर तथा सभी आर्यसमाजों के पदाधिकारी तथा स्थानीय प्रतिष्ठित महानुभाव बडी तादाद में उपस्थित थे।

श्री जयनारायणजी के घरपर शांति यज्ञ का यज्ञ श्री सत्यवतजी के पौरो हित्य में तथा श्री. दीनदयालजी से संयोजकाल में संपन्न हुआ।

हम आर्यप्रतिनिधि सभा म.प्र.विदर्भ के सभी पदाधिकारी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि, ईश्वर-दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे, एवं श्री.जयनारायणजी के परिवार को दुःख सहने की क्षमता प्रदान करें।

प्रधान, प.सत्यवीर शास्त्री

मंत्री, अशोक यादव

युवति-विकास-शिबीर

आर्यप्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के अंतर्गत आर्यसमाज "गारखेडा" औरंगाबाद में २ मई से ९ मई तक शिबीर का आयोजन किया गया है।

शिबीर का प्रवेश शुल्क केवल ५०० रुपये है। शिबीर में निवास-नाश्ता-भोजन एवं प्रशिक्षण विनामूल्य है। मध्यप्रदेश एवं विदर्भ की युवातियों का प्रवेश शुल्क आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ वहन करेगी। अतः शिबीर में सहभागी होनेवाली युवातियाँ मंत्री, या प्रधान से संपर्क करे।

- भवदीय -

अशोक यादव ९३७३१२११६३

पं. सत्यवीर शास्त्री ९४२२१५५८३६

भजन

लेखिका- शकुन्तला शास्त्री गणगणे
सुराज कॉलनी, प्लॉट नं. ४०,
अमरावती.

तेरे प्यार का आसरा चाहती हूँ ।
तेरी भक्ति का सहारा चाहती हूँ ।
देह दिया तूने, निष्काम कर्म के लिए ।
हाथ दिए तूनें, दान करने के लिए ।
व्यर्थ ना गंवाना ये जनम चाहती हूँ ।
तेरे प्यार का .....

नैन दिए तूने प्रभु दर्शन के लिए ।
श्रवण दिए तूने ज्ञान सुनने के लिए ।
काम क्रोधमोह छोड, प्रभु गुणगान चाहती हुँ ।
तेरे प्यार का .....

मानुष जनम मिला है ओ३म जपन के लिए ।
प्रभु स्मरण से ही जनम सफल होगा ।
विषयों को भूलकर, दुःख का अन्त चाहती हुँ ।
तेरे प्यार का .....

बिना स्वार्थ के मैं कर्म करती जाऊं ।
कर्म फल की आशा कभी ना करुं मै ।
सभी कर्म फल तुझको सौपना चाहती हूँ ।
तेरे प्यार का .....

.....***.....

कन्या भ्रूण हत्या

१) सबसे अधिक पूज्य दुनियां में मां होती है ।
मां बनने से पहले वह कन्या होती है ।

२) कन्या ही तो होकर बडी बनेगी माता ?
क्या कोई बिन मां के दुनिया में आ पाता ?

३) राम, कृष्ण, हनुमान, आदि सब जन्मे किसने ?
है क्या, बिन मां लेना जन्म किसी के वश में ?

४) हम सब को भी तो बेटी ने जन्म दिया है ।
सोचो तो हम पर कितना उपकार किया है ?

५) अपने नाना भी निज कन्या मरवा देते ।
तो क्या हम मौजूद आज दुनिया में होते ?

६) फिर क्यों कन्या-भ्रूण नष्ट हम करवाते हैं ?
मानव हो करके दानव क्यों बन जाते हैं ?

७) पहले खोजा जाय भ्रुण हत्या का कारण ।
फिर सब मिल जुल करके उसका करे निवारण ।

८) पहला कारण बेटी के दहेज की चिंन्ता ।
दूजा कारण महिला को मिलती न सुरक्षा ।

९) सभी प्रतिक्षा करें कि कभी दहेज न लेंगे ।
बहन मान महिला पर कभी न जुल्म करेंगे ।

१०) कन्या तो होती है स्वंय लक्ष्मी वन्दे ।
फिर क्यों सब दहेज लालच में हो रहे अन्धे ।

.....***.....

मन्त्र-विचार

लेखिका-शकुन्तला शास्त्री
सुराज कॉलनी, प्लॉट नं. ४, अमरावती. (टावर लाईन)

ओम विश्वानि देवा। सवितर्दु रितानि परासुव।
यद भद्रं तन्न आसुव ।।

अर्थ-हे सवितः= प्रेरक, प्रसविता= सकल जगत के उत्पत्रिकर्ता, सम्पूर्ण ऐश्वर्य युक्त तथा प्रकाश स्वरुप सूर्य देवा। शुद्धस्वरुप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके नः= हमारे विश्वानि= सम्पूर्ण दूरितानि दुर्गुण- बुरे व्यसन और दुःखो परासुव दूर किजिए यत=जो भद्रम= कल्याण कारक गुण कर्म स्वभाव और पदार्थ.

तन्नः है तन्न वह सब हम को आसुव= प्राप्त कराईए।

यह महर्षि दयानंद का प्रिय मन्त्र है। अपने वेदभाष्य के प्रत्येक प्रारंभ में महर्षि ने इसी मंन्त्र से ईश्वर से सहायता के लिए प्रार्थना की है और प्रत्येक मतमतान्तर को माननेवाला मनुष्य इस मन्त्र से बिना संकोच प्रार्थना कर सकता है। इस प्रकार की प्रार्थना सब प्रकार की साम्प्रदायिकता से मुक्त है। सभी मनुष्य दुरित= बुराईयों से बचना चाहते है और भद्र को कल्याण कारी गुणों को ग्रहण करना चाहते है।

परमात्मा के गुण कर्म स्वभाव अनन्त है इसलिए उसके नाम भी अनन्त है। उपराक्त मंन्त्र में ईश्वर को दो नामों से संम्बोधित किया है। वे दो नाम ये है देव और सविता से शब्द विचारणीय है। देव शब्द की परिभाषा महर्षियास्क के शब्दों में देवो दानाव्दा दीपनाद्रा द्योतनाद्वा द्युस्थानें भवति इतिवा निरन्तर दान देने वाला प्रकाश देने वाला विद्युत की भॉति द्योतना=प्रकाश करने वाला और द्युस्थान में=अन्तरिक्ष में स्थित रहने वाला सूर्य, चंन्द्र नक्षत्र आदि तारक गणों को देव कहते है। पृथ्वि, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये भी देव है।

प्रस्तुत मंन्त्र में दूसरा शब्द है सविता-प्रसविता होता है अर्था प्रसविता जनयिता=जन्मदाता तथा उत्पत्रि कर्ता, सवितः = सूर्य-प्रेरक तथा गतिदाता।

देव तथा सविता शब्दों का शाब्दिक अर्थ कर लेने के पश्चात इनके संगत अर्थो पर मंत्र को दृष्टि में रखते हुए विचार करना उचित होगा। मंन्त्र में प्रार्थना की गई है कि हे देवा! सवितः आप आप हमारे संम्पूर्ण दुरित=दुर्गुण, हुष्कर्म तथा दुःस्वभावों को दूर कर दीजिए जो कल्याणकार गुण=सद्गुण, कर्म=सत्कर्म और सत्स्वभावों को हमें प्राप्त कराइए। किसी वस्तु को मांगना ही प्रार्थना= प्र=प्रकर्षेण अत्यधिक आवश्यक होने पर याचना करना उत्कण्ठा से याचना करना। याचक बिना विलंम्ब किए इच्छित वस्तु को प्राप्त करना चाहता है। यहाँ यह भी विचारणीय है कि क्या याचक दाता के पास इच्छित वस्तु मांगने के लिए उत्काष्ठित होता है। कि जल्दि से जल्दि इच्छित वस्तु मिल जाएं। मांगने वाला इतना समझदार होता है वह अयोग्य और दरिद्र व्यक्ति के पास कभी मांगने नहीं जाता, उसे पता होता है कि अमुक स्थान पर मेरी माँग पूरी हो सकती है लोक व्यवहार में भी जिसने अपने पुत्र को पढाना है वह अपने पुत्र को किसी विद्यालय में या गुरुकुल में ही ले जाता है जहाँ पर योग्य अध्यापक और योग्य गुरु होते है। जहाँ उसही माँग पूरी होती है।

इसी प्रकार हमें कपडों की आवश्यकता होने पर हम बर्तनों की दुकानों पर नहीं जाते और बर्तनों की आवश्यकता होने पर कपडों की दुकान पर नही जाते। ठीक उसी प्रकार परमात्मा का नाम देव अर्थात दिव्य गुणोंवाला दाता प्रकाश देनेवाला ज्ञान देनेवाला और जीवात्माओं की आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाला है। इसीलीए तो महर्षि यास्क ने निरुक्त में देवो दाता द्वा दीपनाद्वा। द्योतनाद्वा द्युस्थानों भवति इतिवा यह की है। परमात्मा का दूसरा संम्बोधन है-सविता इस का अर्थ है सर्वस्य प्रस्ताविता=सब का उत्पन्न करने वाला और सविता का अर्थ आदित्य=सूर्य भी है, परमर्पिता परमात्मा क्योंकिनिराकार है इसी लिए वह स्वयं प्रत्यक्ष रुप से किसी की भी सहायता नहीं करता उस प्रभु के सभी कार्य उत्पत्ति स्थिति प्रलय प्रत्यक्ष होते हुए भी अप्रत्यक्ष होते हैं। इसलिए स्वयं प्रभु आकर हमारी सहायता करेंगे यह कल्पना करना भी अज्ञानता है तो फिर इस अवस्थामें हम किससे प्रार्थना करें कि आप हमारी सब प्रकार बुराइयों को दूर करो। इसलिए उपनिषदोने हमें समभाया है मातृदेवो भव पितृदेवो भव आचार्य देवो भव अर्थात देव तीन होते है माता पिता और गुरु। माता-निर्माण भवति पिता पार्लयता भवति आचार्य=गुरु आचार=सदाचाएं ग्राहयाति, सद्गुणान सदाचाए शिष्येक निवेशयति इति आचार्य।

।। ओउम् ।।

महर्षि विरजानन्द जी द्वारा शिष्य दयानन्द से समावर्तन पर अद्भुत गुरु दक्षिणा मांगना

भारत के इतिहास में ऐसी गुरुदक्षिणा पहले न मांगी गर्द और न भविष्य में मांगने की संम्भावना है ।

अदभुत चिन्तन ऋषि विरजानन्द जी का

ईश्वर की सृष्टि में जब ऋतः सत्य का सन्तुलन डगमगाने लगता है, तभी ऋतः सत्य का सन्तुलन बनाने के लिये ईश्वरीय व्यवस्थानुसार इस धरती पर विलक्षणमहापुरुषो का जन्म होता है। ऐसे ही दो महापुरुषों का भारत में इस युग में जन्म हुआ था, एक महर्षि विरजानन्द सरस्वती जी और दूसरे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी हुए है। ऐसा निम्न चिन्तन कान्त दर्शी देवता की आत्मा में ही सकता हैं ।

विलक्षण गुरु दक्षिणा मांगना

महापुरुषों का कार्य संसार को ऋत सत्य की ओर मोडना होता है। महर्षि विरजानन्द जी का मानवो को सुखी करने का चिन्तन सर्व प्रथम यह था कि भारत की गुलामी के निम्न कारण और संसार को इसका ज्ञान कराना आवश्यक है। तथा कथित भगवानो की पूजा कर रहा है। ईश्वरीय वाणी वेदों को भूल कर अनेक पाखण्डों में फंस गया है, वैदिक धर्म के स्थान पर अनेक अलग-अलग मतो को स्थापित करके उसको धर्म कह कर सामान्य जनता को भटका रहा है। ऋषियों द्वारा आर्ष ग्रन्थों को न मान कर अनार्ष ग्रन्थो को मान कर संसार को भ्रमित कर रहा है। समाजिक अन्धविश्वासो में नारी को पढने का अधिकार नहीं है शुद्रो को पढने का अधिकार नहीं है । जाति-पाति छूआ-छूत का प्रचार करना आदी अनेक सामाजिक कुरुतियो द्वारा समाज का पथ भ्रष्ट करना। वीरो व राजाओं को सत्य शास्त्र व शस्त्र विद्या का मार्ग न बताकर बुंतो की पूजा करके राष्ट्र रक्षा करने की शिक्षा न देना, तथा अनेक धर्मिक अन्धविश्वासों के मानने से हमारे राष्ट्र भारत वर्ष सदियों से आन्तिरक व विदेशियों का गुलाम हो रखा है । जाओ दयानन्द इन बुराईयों से देश को स्वतत्र कराओ व बचाओ, यही मेरी गुरु दक्षिणा होगी ।

ऋषि विरजानन्द का संक्षिप्त जीवन परिचय

गुरु विरजानन्द जी का जन्म १७७९ में पंजाब के करतापुर के निकट ग्राम गंगापुर में हुआ था । पांच वर्ष की अल्प आयु में ये चेचक के कारण नेत्र दृष्टि से हीन हो गये थे । और तेरह वर्ष की आयु में माता-पिता की छत्र-छाया से भी वंचित हो गये थे । इन सभी बाधाओ के होते हुए भी उन्होने साहस और धैर्य का पल्लू नहीं छोडा। और अपने युग के संस्कृत व्याकरण के अद्वितीय विद्वान बने ।

अष्ठाध्यायी अध्ययन का पुनः उद्धार करने और आर्ष पद्धीत का आविष्कार करके इतिहास में अपना स्थान बनाया । वे राष्ट्र भक्ति निर्भयता और आत्मसम्मान व आर्ष पद्धति के दिव्य मूर्ति थे । उन्होने युगो के पश्चात वेदो को स्वतः घोषित किया, और निरक्त, शास्त्र, महाभाष्य, अस्टाध्यायी के माध्यम से वेदों के ईश्वर परक अर्थ बताये । और विश्व को महर्षि दयानन्द जैसा महान शिष्य दिया । जिन्होने आगे चलकर १८७५ में मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की । और दयानन्द जी ने भारत की प्रसुप्त आत्मा को जगाया । और मानव जाति को वेदो का संदेश दिया । ऋषि विरजानन्द जी ने संसार को आर्ष व अनार्ष सहित्य का ज्ञान का उपदेश देकर बृहद कल्याण किया जो आगे चलकर सामाजिक जगत में अमूल परिवर्तन का कारण सिद्ध हुआ ।

महर्षिदयानन्द जी का संक्षिप्त परिचय व कार्य

ऋषि दयानन्द का जन्म (१८२४-१८३३ ईसवी) मे भारत के कठियावाड प्रान्त के मोरेवी राज्य के टंकारा ग्राम में हुआ था । पिता का नाम कर्सन जी लाल जी त्रिवेदी था । वे ओदच्यि ब्राम्हण थे । उनका बचपन का नाम मूलशंकर था, सन्यास लेने के बाद उनका नाम दयानन्द हुआ १४ वर्ष की आयु में यजुर्वेद कण्ठस्थ कर लिया था-एक दिन शिवरात्री के पर्व पर शिव

की मूर्ति के सामने उनके दर्शन की प्रबल इच्छा से सारी रात काट दी। शिव के दर्शन तो क्या होने थे, उन्होने देखा कि चूहे बिलो से निकल आये और मूर्ति पर चढे नैवेद्य को खाने लगे। यह देख मूलशंकर के हृदय में जिज्ञासा उत्पन्न हुई ये कैसे देवता है जो चूहों से भी अपनी रक्षा नहीं कर सकते है उनकी इस शंका का समाधान काई न कर सका। यही कारण है उन्होने मूर्ति पूजा का जबर्दस्त खण्डन किया।

ऋषि दयानन्द जी ने अनेक ग्रन्थ लिखो उनका मुख्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाशहै। उन्होने सामाजिक विचार धारा के क्रियात्मक रुप देने के लिये १० अप्रेल १८७५ में मुम्बई के एक मोहल्ले गिरगांव में आर्य समाज की स्थापना की आर्य समाज अपने जन्म काल से आज तक समाजिक, धार्मिक तमाम बुराईयों को मिटाने के लिये चट्टान की तरह खडा है और आगे भी रहेगा। उन्होने संसार का कल्याण के लिये सत्यार्थ प्रकाश अमर ग्रन्थ की रचना करी।

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में महर्षि दयानन्द के विचार

यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतो में हैं, वे पक्षपात छोड कर सर्वतन्त्र सिद्धांत अथार्त जो-जो बाते सबके अनुकूल सबमें सत्य है उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध बाते है, उनका त्याग कर परस्पर प्रगति से वर्ते-र्वत्तायें तो जगत का पूर्ण हित होवे, क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानो मे विरोध बढकर अनेक विधि दुख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने इनमें से जो कोई सार्वजनिक हित लक्ष्य में घर प्रवृत्त होता है, उससे स्वार्थी लोग विराध करने पर तत्पर होकर अनेक प्रकार विघ्न करते है परन्तु-सत्यमेव जयति नानृत सत्येन पन्था विततो देवयानः

सवर्दा सत्य का विजय और उसत्य का पराजय और सत्य ही से विद्वानो का मार्ग विस्तृत होता है। इस दृढ निश्चय के आलम्ब से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी नहीं सत्यार्थ प्रकाश करने से हटते।

सत्यार्थ प्रकाश उत्तरार्द्धः अनुभूविका (१) से

मनुष्य जन्म का होना सत्या के निर्णय करने कराने के लिये है न कि वाद-विवाद विरोध करने कराने के लिये। इसी मतमतान्तर के विवाद से जगत में जो-जो अन्ष्टि फल हुए होते है, और होंगे उनकी पक्षपात रहित विद्धवतजन जान सकते है जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मतमतान्तर का विरुद्धवाद न छूटेगा तब तक अन्य का आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्धवतजन ईष्या द्वेष छोड सत्या सत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना कराना चाहे तो हमारे लिये यह बात असाध्य नहीं है। यह निश्चय है कि इस विद्वानों के विरोध ने ही सबको विरोध जाल में फसा रखा है यदि ये लोग अपने प्रयोजन में फंस कर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना चाहे तो अभी ऐक्यमत हो जायें।

महर्षि दयानन्द जी के देवत्य कार्य-शिष्य हो तो ऐसा हो।

१. वेदों के रुढी अर्थे पर प्रहार कर निरुक्त शास्त्र के अुसार ईश्वर परक अर्थ बताऐ। २.रुढीवाद पर प्रहार कर प्रत्येक क्षेत्र में रुढीवाद को तिलान्जिलि देने का नारा लगाया। ३.सामाजिक क्षेत्र में रुढीवाद पर प्रहार करके हिन्दु धर्म को रखते हुए उसके अन्दर से काया पलटने का कार्य किया। ४.राजनेतिक क्षेत्र में रुढीवाद पर प्रहार करे कोई कितना हि करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। ५. समाजवादी विचार धारा पर प्रहार करके जाति-पाति, छुआ-छुत, उंच-नीच सामाजिक कुरुति बताया। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में ही समाजवाद प्राप्त होना, आदि।

महार्षि दयानन्द जी भारत के १९ वी शताब्दि के सबसे महान सामाजिक विचारक थे उनकी छाप आने वाले सब विचारको पर पडी। उन्होने अपने क्रान्तिकारी विचारो से युग में परिवर्तन कर दिया, आज जो हम स्वतत्रंता एवं समाज में व्याप्त कुरुतियों के व्यापक अर्थ-अनर्थ को सोच समझ रहे हैसब उनकी देन है, और इन विचारो को चिर स्थाई रखने के लिये अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश लिखा और आर्य समाज का गठन कर दिया महर्षि विरतानन्द जी एवं ऋषि दयानन्द जी के हम सदैव रिणी रहेंगे।

आज की आवश्यकता

संसार के सभी धर्माचार्यो को सत्य और सर्व हितकारी विषयों में एक मत होकर धर्मोपदेश करना चाहिए। आर्य समाज संगठन संसार के धर्माचार्यो का आवाहन करता है कि आइए हमारे साथ मिलकर जगत का उपकार करें।

नोटः- लेखक के लेख प्रत्येक माह आर्य जगत की प्रतिकाओं के अतिरिक्त अन्य गैर आर्य समाजी प्रतिकाओ में भी प्रकाशित होता है।

8000 मील व्यास वाली यह पृथ्वी पदार्थ जगत की एक छोटी-सी गेंद है. असीम अन्तरिक्ष की तुलना में वह गेंद से भी छोटी है.

अन्तरिक्ष अपने भीतर भी है।

पृथ्वी से भिन्न सबसे पास का पिंड चन्द्रमा ढाई लाख मील दूर है. सबसे निकट का नक्षत्र भी तीन प्रकाश को सूर्य से पृथ्वी तक आने में आठ मिनट लगते है, फिर ब्रम्हांड की अन्तर्वरीयता को तो नापना ही कहाँ संभव है? इस अपरिमित पार्थक्य को मनुष्य जानबूझ कर अवगाहित करने जा रहा है. यदि एक बार अन्तरिक्ष यान दो मील प्रति सेकेंड की रफ्तार से दुर्घटनाग्रस्त हो जाए तो अन्तरिक्ष यात्री की हड्डियां भी धरती माता तक लाखों वर्ष बाद भी नहीं पहुँच पाएंगी. इस जोखिम भरे काम से क्या लाभ?

मानवता को अन्तरिक्ष युग के योग्य होने की इच्छा है तो उसे आत्मिक क्राँति करनी होगी. विचार और आचरण की लघुता जिससे आज सारा समाज ग्रस्त है, उससे मुक्ति पाकर अपने मानस को स्वयं अन्तरिक्ष की तरह विस्तृत और सब की अनुभूति में अपना सुख अनुभव करना होगा. एक समय था जब देवी-देवता यहां आया करते थे. इन कथानकों में कितना सत्य है, पता नहीं. किन्तु उनके साथ जो घटनायें जुडी है, वह बताती हैं कि अन्तरिक्ष का उपयोग भी धरती के लोगों के स्वास्थ्ट सुख, सद्प्रवृत्तियां और चरित्र को ऊपर उठाना ही रहा है. यह है कि अन्तरिक्ष के अपरिचित रुप वाले जीवन का उपयोग मानवीय आत्मा के उत्थान के लिए होना चाहिए.

उसमें विज्ञान भी आ जाता है, उसके छूट जाने की बात सोचना सही नहीं है.

आज की अन्तरिक्ष यात्रा का रुप सही नहीं है. उससे मनुष्य के साधन सीमित हो जाएंगे, समस्याएं बढ जाएंगी. चंन्द्रमा तक पहुंचने, वहां उपनिवेश बनाने और खनिज की खुदाई करना ही बडा कठिन काम है. फिर असीम अन्तरिक्ष को नापना और वहां पर मानवीय विकास की समस्या पर विचार करना तो और भी टेढी खीर है. जो सरल और शुचितम है, वह यही कि मनुष्य पहले अपने आपको खोजने का यत्न करे, संभव है, उसे अपने ही भीतर एक विशाल गुण और संताषदायक अन्तरिक्ष उपलब्ध हो जाए।

- डॉ. सम्पूर्णानन्द

.....***.....

जिंदगी

* चंद्रसेन विराट

उम्र भर युद्ध लड़ी होती है
अपने पैरों पे खड़ी होती है
ज़िंदगी सच में वही है सार्थक
छोटी हो के भी बड़ी होती है

*

मौत तो पीछे पड़ी होती है
ज़िंदगी उससे लड़ी होती है
मौत तो अंत, स्थगन है गति का
ज़िंदगी गति से बड़ी होती है

*

सुध न रह पायी, मेरे होश उड़े
मेरे भीतर की ओर भाव मुड़े
देवी सौंदर्य की जो प्रकटी तो
आंखें चुंधियाईं और हात जुड़े

*

भाव उपपत्ति नहीं होती है
रस की उत्पत्ति नहीं होती है
दर्द जब तक हो नहीं कविता में
उसकी निष्पत्ति नहीं होती है

*

मुक्त आकाश कहां मिल पाया
प्रेम का पाश कहां मिल पाया
यश तो चक्खा ही नहीं, रचने से
हमको अवकाश कहां मिल पाया

*

उसको पाता हूं मैं जहां जाऊं
आप बतलाइए वहां जाऊं
मैं परेशां हूं अपनी प्रज्ञा से
दूर मैं खुद से कहां जाऊं

*

जो था करणीय वो किया ही नहीं
पेय प्याले में था, पिया ही नहीं
कल सुखद आयेगा यही कहकर
आपने आज को जिया ही नहीं

शिवरात्री
महर्षि जन्मोत्सव व बोधोत्सव संपन्न

आर्य समाज मंदिर - हंसापुरी में महाशिवरात्री के पावन पर्व व मानव एवं प्राणी के कल्याण के लिये सर्वज्ञान भंडार पवित्र वेद के माध्यम से भटकी हुई मानव जाती को सच्चा मार्ग दिखानेवाले युग प्रवर्तक महर्षि दयांनंद सरस्वती के जन्मोत्सव तथा बोधोत्सव पर दिनांक २१ फरवरी से २४ फरवरी तक चतुर्वेदशतक यज्ञ प्रवचन व भजन के माध्यम से मनाया गया जिसमे ५१ जोडो ने यज्ञ मे भाग लिया। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रम्हा पं. कृष्णकुमार शास्त्री ने धर्म, संस्कार व संस्कृती पर अपने अद्‌बोधन मे कहा कि आर्य समाज कि स्थापना महर्षि दयानंद सरस्वती ने वेदो के माध्यम से मानव के कल्याण के लिये कि है इसलिये हर इन्सान ने धर्म कि सच्ची परिभाषा को जानते हुये, सत्य पर चलते हुये मानव जीवन को सार्थक बनाने का प्रयास करना चाहिए। उन्होने लाल स्कुल स्थित प्लेटफार्म के बच्चो को भी संस्कारो मे ढालने का प्रयास जारी किया है, इस अवसर पर इन बच्चो व महर्षि कॉन्हेंट के बच्चो मे प्रश्नो - उत्तरी का भी आयोजन किया गया था जिसमे बच्चो ने बढ-चढ कर हिस्सा लिया व उन्हे पुरस्कार भी दिये गये। आर्य समाज हंसापुरी के प्रधान प्रा. अनिल शर्मा जी द्वारा नारी शिक्षा पर प्रकाश डाला गया वहीं कोषाध्यक्ष संतोष गुप्ता व सदर के मंत्री रंगलाल प्रजापती द्वारा सुन्दर व मधुर भजनो से उपस्थित धर्म प्रेमियो का मन मोह लिया । इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के मंत्री अशोक यादव ने कहा कि आज संसार के समस्त आर्य समाजो मे महर्षि दयानंद का जन्मोत्सव बडे धूम-धाम से मनाया जा रहा है, आओ हम सब मिलकर इस बोधोत्सव पर शपथ ले कि संसार के उत्थान मे अच्छे व सत्यकर्म से मानवता के लिये प्रयासरत रहेगे । इस अवसर पर विशेष रुप से आर्य समाज वर्धा के प्रधान श्री ताराचंद जी चौबे, ताजनगर के प्रधान श्री हरिदत्त जी जुमडे, श्री नवघरे जी भी उपस्थित थे । कार्यक्रम की सफलता के लिये सर्वश्री रायभान वाडीभस्मे, तरुण शर्मा, मयंक यादव, रेखा जोगी, श्रीमती तेजस्वनी रिनके, लिलाबाई आंबटकर, निशा गुप्ता, श्रीमती लिला गरसिया, दिवेश शर्मा, राजेन्द्र पांडे आदि ने अथक सहयोग प्रदान किया ।

यज्ञ के ब्रह्म पं. कृष्णकुमार शास्त्री व प्रधान प्रा. अनिल शर्मा प्रवचन करते हुये।

.....***.....

आर्य समाज, बेलखेड डि.ए.व्हि. स्कुल का भूमिपुजन

उंबरकार परिवार द्वारा स्कूल हेतु भु-दान

आर्य प्रतिनिधि सभा से संबंध आर्य समाज बेलखेड के मंत्री श्री शांतीलाल गोमासे के अथक प्रयासों से जिल्हा परिषद अकोला के सदस्य व बेलखेड के सम्मानित परिवार मा.श्री गजाननभाऊ विठ्ठलरावजी उंबरकार व उनकी धर्मपत्नि मा.सौ. स्वातीताई गजाननराव उंबरकोर-सदस्य ग्राम पंचायत बेलखेड द्वारा बच्चो की शिक्षा हेतु आर्य समाज बेलखेड के सदस्यों द्वारा स्कूल खोलने हेतु करीब ५००० स्के.फिट. जमीन दान में दी और साथ ही विश्वास दिलाया कि जैसे-जैसे स्कूल प्रगती करेंगा, वैसे-वैसे आवश्यकता पडने पर भुमि का और दान देने का वचन किया । इस अवसर पर क्षेत्र के गणमान्य नागरिकों द्वारा प्रातकालः कि बेला पर यज्ञ के ब्रह्मां आर्य जगत के पं.कृष्णकुमार शास्त्री द्वारा संम्पन्न किया गया । अपने उद्‌बोधन में मा.श्री पुंडलिकरावजी अरबट-समाप्ती, अर्थ व शिक्षण जि.प. आकोला, मातृशक्ति सौ. जयश्रीताई पुंडरकर, अध्यक्ष, नगर परिषद तेल्हाया मा.श्री प्रशांतजी दिग्रसकर (शिक्षणाधिकारी जि.प.अकोला) मा.श्री. अशोकजी डोंगरदिवे (गटशिक्षणाधिकारी प.सं.तेल्हारा) मा.श्री. दादासाहेब वरठे वरिष्ठ शिक्षण विस्तार अधिकारी पं.सं.तेल्हारा, उपस्थित समस्त गण-मान्य लोगो ने तन,मन,धन से गाँव किइस सेमी इंग्लिश स्कुल को सहयोग करने का अश्वासन दिया । इस पुनित कार्य को सफल बनाने हेतू शांतीलाल गोमासे (सचिव, डी.ए.व्ही.), राजेश व्ही.चर्जन (मुख्याध्यापक), हरिहरजी राऊत (संचालक), योगेश लोळे (शिक्षिक), नंदकिशोरजी निमकर्डे (कोषाध्यक्ष), कु.रविना मानखैर (शिक्षिका), जानरावजी चोपडे (संचालक), सौ. कोमलताई खुमकर (शिक्षिका), ओमप्रकाश उंबरकार (संचालक), सौ.रुपालीताई राहाटे (शिक्षिका), लक्ष्मण लोळे (संचालक), कु.मोहिनी खुमकर (शिक्षिका), दिपक नागपुरे (संचालक), सौ.ज्योतिताई टोहरे (शिक्षिका), नंदकिशोर उंबरकार (संचालक), सौ. वर्षाताई गोमासे (संचालिका), व समस्त शिक्षकेत्तर कर्मचारी, डि.ए.व्ही. स्कुल, बेलखेड ता.तेल्हारा आदि ने अथक प्रयास कर इस भागिरथी सोच को सफल बनाया गया ।

भूमिपुजन करते हुये उंबारकर परिवार

.....***.....

आर्य समाज, बेलखेड के डि.ए.व्हि. स्कूल का भूमिपुजन के अवसर पर उपस्थित जनसमुदाय

बेटी बचाओं
बेटी पढ़ाओं

॥ ओउम् ॥

भारत वर्ष भ्रष्टाचारियों का देश कैसे और क्यों बनता जा रहा है

युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कहते है कि ऐसे शक्तिशाली महान भारत देश का आज क्या से क्या हो गया है। इस देश का पतन महाभारत युद्ध के एक हजार वर्ष पूर्व ही होना आरंभ हो गया था, और देश की दुर्दशा का इतिहास बनता चला गया। वेद का पठन पाठन छूटने से घोर अविद्या के फैल जाने से नाना मत पंथो के प्रचलित हो जाने से और परस्पर के विरोध से यहां विदेसियो ने इस भारत रुपी सोने की चिडिया को गुलामी के पिंजरे में बन्द कर लिया था।

हम किस किस को दोष दें, हमारे नाना सम्प्रदायवाद नाना जातिवाद और क्षेत्रवाद तुा व्यक्ति वाद से इस देश में फूट का बीज बोकर इस देश को दुदर्शो के कगार पर लाकर खडा कर दिया है। विशेष कर भारत के स्वतंत्र हो जाने के पश्चात यहाँ के मनुष्यों के मानवता का पतन होता आ रहा है। शास्त्रों में कहा है जो ईश्वरीय धर्म का हनन करता है, धर्म उसका अवश्य हनन कर देता है। क्योंकि अत्याचार और अनीति करने वाले से बडा अत्याचार को सहने वाला अधिक पापी होता है। सत्य की उपेक्षावृति ने ही इस देश को पतन की पराकाष्ठा पर पहुंचा दिय है। जिस देश की छाती पर दुश्मन सहत्रो वर्षो तक सवार रहा हो फिर भी यह जीवित रह रहा है इस का कारण अवश्य हैं।

यह नितान्त सत्य है, क कहीं न कहीं ईश्वरीय वेदिक धर्म का बीज का अस्तित्व शेष रह गया है, जिस कारण भारत जीवित है। क्योंकि प्रमाण है जिस देश का छः हजार वर्ष से पतन ही पतन होता जा रहा हो फिर भी जीवित है, खडा है।

भ्रष्टाचार और चोरी करने की आदत कहां से आई ?

स्वतंत्रता प्राप्ति के ६८ वर्ष हो गये हैं और यह संस्कार हमारे वक्त का अंग बन चुके है इसका कारण यह है कि नागरिको को चोरी और झूठ बोलने की आदत मुसलमानों से आई। अतः साढे सात सौ वर्ष की गुलामी में सारे दुर्गुण मुसलमानों से ही आये इससे पहले भारतीय न झूठ बोलते थे व न चोरी करते थे। वैसे बुराई तो अंग्रेजो से भी आयी पर उतनी नहीं। अंग्रेज गवर्नर लार्ड मैकाले ने अपनी संस्कृति फैलाने के लिये दुरदर्शी कार्य किया कि भारत की शिक्षा पद्धती में अंग्रेजीयत का बीज डाल दिया, परिणाम स्वरुप आज भारत में पाश्चात्य सभ्यता व संस्कारों का वह बीज विशाल वृक्ष बन गया है।

मैं एक कारण और भी मानता हूँ की महाभारत युद्ध के पश्चात भारत में भारतीय प्रजा में ९० प्रतीशत वर्णशंकरता आ चुकी है, चाणक्य के अनुसार वर्णशंकरता सर्वनाम का ही कारण बनीं है।

देवताओं का यह देश अपनो द्वारा ही लुटेरो का देश बनता जा रहा है ? कैसे

ईश्वर का मूल स्वरुप

१. ईश्वर उसे नहीं कहते जो कभी हो और कभी न हो ईश्वर सदैव है पहले भी था और अब भी है और आगे भी रहेगा अर्थात ईश्वर सर्व कालिक है।

२. ईश्वर उसे भी नहीं कहते जो कहीं हो और कहीं न हो वह सर्व व्यापक है, कण-कण मे हैं अतः वह यहां भी है, और बाहर भी है।

३. ईश्वर उसे भी नहीं कहते जो किसी का हो और किसी का न हो। सबको होने से वह सर्वव्यापक है, अंतः वह सर्वेश्वर, निराकार, सर्व शक्तिमान, अजन्मा और सर्वान्तयामी है शरीर रहित है, सूक्ष्मदर्शी है, सर्व देशि है।

ईश्वर के नाम पर भ्रष्टाचार

इतिहास साक्षी है इस संसार में जितना नर संहार व शोषण ईश्वर के नाम से हुआ है और अब भी हो रहा है, उतना अन्य किसी विषय पर नहीं हुआ है। ईश्वरीय वाणी वेद ज्ञान से शून्य चतुर लोगो ने ईश्वर को अवतार लेना, व जन्मा, व मूर्तिमान भोली-भाली जनता को ईश्वर के सत्य स्वरुप से भटका कर अपनी-अपनी दुकान दारी, खूब चमका रहे हैं वास्तव में ईश्वर के नाम से जनता का अपार शोषण हुआ है और हो रहा है। यह ईश्वरीय नाम पर भ्रष्टाचार हैं अपने-अपने मन्दिरों में महापुरुषों की मूर्तियां लगा कर, उनको ईश्वर मान अध्यात्म भूल कर रहें हैं। प्राणी मात्र को एक निराकार ईश्वर को ही मानकर सार्व शोम सुख मिल सकता है।

धर्म का स्वरुप

धर्म एवो हतो हन्ति धर्मो रक्षिति रक्षित

जो मनुष्य धर्म का नाश करता है धर्म उसका नाश करता हैं अर्थात प्रत्येक कृत्य या पदार्थ को उसके गुण क्रमानुसार व सृष्टि क्रमानुसार मानना, प्राणी मात्र के साथ अनुकूल व्यवहार करना, कृत्य अकृत्य का विचार करना, तथा जैसा हम दूसरो से अपने लिये चाहते है, वैसा ही दूसरो से व्यवहार करना, व ईश्वरीय व्यवस्था सृष्टि क्रमानुसार, व

विज्ञान के अनुसार सत्य असत्य विचार कर चलना धर्म है।

धर्म के नाम पर भ्रष्टाचार

मनु स्मृति में कहा है जहां देखते देखते अधर्म से धर्म और असत्य से सत्य मारा जाता हो वे सबके सब मरे हुओं के समान हैं वास्तव में जिस ज्ञान धर्म पर हम जीते है वह हमारा स्वाभाविक ज्ञान नही होता, अपितु हम पर थोपा हुआ होता है। हम हिन्दु मुसलमान सिख, ईसाई, पारसी, जैन, इत्यादी क्यो होते है, क्योंकि हमने उन परिवारो में जन्म लिया होता है, और पैदा होते ही हम पर अपने-अपने मान्य धर्मो की मान्यताओ से पाला पोसा जाता है और उसी की पूजा पद्धति से हमें संस्कारित किया जाता है, हम अपनी बोली नहीं बोलते, बल्कि उस धर्म व मत की बोली बोलते है। उसके खिलाफ कुछ नहीं सुनना चाहते, उसे अपना सम्मान व कर्म समझते हैं और उसी की पूजा पद्धति से हमें संस्कारीत किया जाता है, हम अपनी बोली नहीं बोलते, बल्कि उस धर्म व मत की बोली बोलते हैं। उसके खिलाफ कुछ नहीं सुनना चाहते, उसे अपना सम्मान व कर्म समझते हैं और सारा जीवन उसी मे पीढी दर पीढ गुजारते चले जाते हैं। तथा सत्य धर्म अर्थात ईश्वरीय व्यवस्था व परोपकारी, सर्व हितकारी मान्यताओं पर पर्दा डाल देते हैं। और अपनी तथा कथित मान्यताओं के लिये संघर्ष करते रहते हैं। उससे मानव जगत में धर्म के नाम भ्रष्टाचार फैलता जाता है। मत मतान्तर आपस में विराधाभास पैदा करते हैं।

जाति के नाम पर भ्रष्टाचार

ईश्वर ने मनुष्य, पशु, पक्षी, सांप बिच्छु, गाय, घोडा व अनेक भिन्न-भिन्न जातियां बनाई है और वह अपने स्वरुप में जन्म से मृत्यू तक बनी रहती है अलग-अलग शरीर होने से अलग-अलग जाति की पहचान बनाई हे। मनुष्यों में ईश्वर ने केवल मनुष्य जाति बनाई है, और अपने-अपने गुण क्रमानुसार विद्वानों ने वर्ण घोषित किये है। किन्तु हमने अपने अज्ञान से हजारो तथा कथित जातियां बना ली है, और उसमें ही हम मनुष्यों में छोटा बडा ऊंच नीच जातिया मानते है, जबकि उन जातियों की मूल उत्पत्ति अर्थात मान्यता का हमें इतिहास का भी ज्ञान नहीं होता। अतऐव जातियों के नाम पर महाभारत काल से कुछ वर्ष पहले से अब संसार में महा भ्रष्टाचार फैला हुआ हैं। जो ईश्वरीय व्यवस्था के विरुद्ध है।

राजनीति का स्वरुप व भ्रष्टाचार

राजनीति का आधार रुढियों व सामाजिक कुरुतियों, अन्धविश्वासों, जाति रहित सम्पन्न व गरीब मान्यताओ रहित, व सबको समान अधिकारो से वंचित बुराईयो का उन्मूलन करना राजनीति का आधार होना चाहिए था। किन्तु आज वैदिक धार्मिक मान्यताओं, व राजनीति विद्वानो के नेतृत्व के अभाव में राजनीति में भ्रष्टाचार की बाढ आ रखी है। यही कारण है, जनता में आलस्य, परस्पर, विरोध, स्वार्थ, सवर्दा निज हित, जाति पाति की राजनति में भ्रष्टाचार फैला हुआ है समाज के चंहु मुखी विकास का कारण धर्मशक्ति + राजशक्ति + ज्ञानशक्ति + धनशक्ति के गठनबन्धन से समाज का सच्चा उत्थान होता है इसलिये, भारत का नेतृत्व विद्वानो के हाथ मे ही होना चाहिए। इसके लिये भारत को कालान्तर में स्वस्थय नेतृत्व प्रदान के लिये राजनीति कालेजो की स्थापना व उससे उत्तीर्ण अभ्यार्थी को ही चुनाव लडने को अधिकार देना होगा, तभी कुशल विद्वानो के हाथ नेतृत्व जावेगा।

आज के युग में भौतिकवाद व आध्यात्म वाद का संघर्ष

धर्म व भौतिक संघर्ष में हमे वैज्ञानिक ईश्वरीय परक आधार खोजना होगा। क्योंकि ईश्वर व विज्ञान सत्यश पर आधारित है। सत्य ज्ञान मानव को अज्ञान से दूर कर सृष्टिक्रम का ज्ञान देता हैं और वहीं कार्य धर्म का है, जब धर्म की मान्यताएं वैज्ञानिक और परोपकारी आधार पर होती है तो वह कल्याण कारी होता है। वस्तु या धर्म का अच्छा या खराब उसके उपयोग पर होता हैं, जैसे एक चाकू सर्जन के हाथ में परोपकार और आताताई के हाथ में हत्या का कारण बनता हैं। सृष्टिक्रम व विज्ञान के व ईश्वरीय धर्म के बिना धर्म अधूरा है।

अन्त में आत्म निवेदन

आज भौतिक वाद व विज्ञान चरम सीमा पर प्रगति कर रहा हैं, वहीं सत्य आध्यात्म वाद व मानव नैतिकता के आचरण गिरते जा रहे हैं। मानो मानवता कहीं खोती जा रही हो। जहां विज्ञान व मानव के नैतिक चरित्र का समन्वय होना चाहिए था, वहीं दोनो विधाऐं प्रथक प्रथक मार्ग पर चल रही हैं जिसके कारण मानव जगत में नैतिक पतन होता जा रहा है, और भारत वासी अधिकांस मनुष्य अवसर वादी होकर उनके संस्कार लूट और भ्रष्टाचार के ओर जा रहे हैं। आज आध्यात्म नेतृत्व, सामाजिक सुधार नेतृत्व, राजनीति नेतृत्व को एक जुट होकर भारत वर्ष को भ्रष्टाचारियों का देश होने से बचाना होगा।

- पं.उम्मेद सिंह विशारद (वैदिक प्रचारक)
गढ निवास मोहकमपुर देहरादून उत्तराखंड मो. ९४११५१२०१९

ऐतरेय उपनिषद् से मनुष्य शरीर

हिरण्यगर्भ ब्रह्मा के द्वारा अग्नि, वरुण, पवन आदि इंद्रियों के अधिष्ठाता जब उत्पन्न हुए, तो इस संसाररुपी महासमुद्र में उन्हें रहने का कोई स्थान नहीं मिला। उन्होंने हिरण्यगर्भ ब्रह्मा से कहा, हम पंचभूत भूख-प्यास से पीडित हैं। हमारे रहने के स्थान की व्यव्यस्था करें, ताकि हम आहार ग्रहण कर सकें।

उनकी प्रार्थना सुनकर सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने एक गौ का शरीर बनाकर उन्हें दिखाया और पूछा कि इसमें वास करोगे? तो उन्होंने कहा, यह हमारे लिए उपयुक्त नहीं है।

फिर ब्रह्मा ने घोडे के शरीर का निर्माण किया। उसे देखकर उन्होंने कहा, इससे हमारा काम नहीं चलेगा।

तब परमात्मा ने बहुत विचार करके मनुष्य शरीर की रचना की। यह देखते ही सारे अधिष्ठाता देव बहुत प्रसन्न हुए तथा बोले, अहा, यह आपकी सुंदरतम रचना है। इसमें हम बहुत आराम से रहेंगे।

ब्रह्मा भी उन देवताओं को शरीर जैसा उपयुक्त स्थान देकर संतुष्ट हुए। फिर बोले, अपने-अपने लिए उपयुक्त स्थान देखकर इसमें प्रवेश कर जाओं।

इतना सुनते ही अग्नि ने वाक् शक्ति धारण कर उदर में प्रवेश किया।

वरुण ने रसना में वास किया। वायुदेव नासिका में प्रवेश कर प्राणवायु के रुप में समस्त शरीर में व्याप्त हो गए। आकाश ने शरीर के हर शून्य भाग में प्रवेश किया। इस प्रकार जब सबने स्थान प्राप्त कर लिया तो भूख-प्यास ने कहा, प्रभो, हमारे लिए भी तो व्यवस्था किजिए।

ब्रह्मा ने कहा, तुम्हारे लिए अलग से व्यसस्था करने की आवश्यकता नहीं हैं। तुम दोनों को इन देवताओं के स्थान में बांट देता हूं। इन देवताओं के आहार मे तुम्हारी भागीदारी रहेगी। इनकी संतुष्टि से तुम्हें भी तृप्ति मिलेगी।

सबके स्थान की व्यवस्था कर ब्रह्मा ने विचार किया कि इनके निर्वाह के लिए अन्न का भी सृजन होना चाहिए, क्योंकि इनके साथ भूख-प्यास लगा दी है। तृप्ति न होने पर सब लडने लगेंगे। जब अन्न का सृजन हुआ और अन्न ने देखा कि मुझे खाने वाला मेरा विनाशक है तो वह बचने कि लिए भागा। तब सब देवताओं के संयोग से उत्पन्न हुए जीवात्मा ने वाणी द्वारा उसे पकडना चाहा तो वह पकड में न आ सका। अगर ऐसा होता तो उच्चारण के द्वारा ही तृप्त हो जाता। इसी प्रकार घ्राण इंद्रिय, नेत्र इंद्रिय, त्वचा इंद्रिय सबसे उसे पकडने का प्रयास किया। पर कोई सफल नहीं हुआ अक्षर सफल होते तो अन्न के सूंघने, देखने, नाम सुनने तथा उसे छूने से ही तृप्ति मिल जाती।

अंत में वह पुरुष मुख के द्वारा अन्न को शरीर में प्रवेश करने में सफल हुआ। इस अन्न ने अपना बलिदान कर अपने तत्व से शरीर में स्थापित सब देवताओं को तुष्ट दिया। यही सबके लिए प्राण-स्वरुप हुआ। इस प्रकार सब लोक और लोकपालों की रचना हो गई। अन्न से प्राण का संचार हुआ तो परमात्मा ने सोचा कि यह मनुष्य मेरे बिना अकेला कैसे रहेगा? मनुष्य रुप में उत्पन्न हुए उस पुरुष ने भी जब भौतिक जगत की विविध तथा विचित्र रचना को देखा तो आश्चर्य से अभिभूत होकर उसने कहा, यह तो मेरी रचना नहीं हैं। अवश्य ही इस सबका सृजक कोई और ही है, जो भले ही अदृश्य है, पर हमारे रोम-रोम में व्याप्त है। इस ब्रह्मांड में सर्वत्र व्याप्त है।

ऐसा विचार आते ही वह उद्वेग से भर उठा और कहा, मैंने परब्रह्मं परमात्मा को देख लिया। उससे साक्षात कर लिया। इस जगत की रचना का कर्ता-धर्ता परब्रह्मं परमात्मा ही हैं।

भाव यह है कि परमात्मा को जानने और उसको पाने का काम केवल मनुष्य शरीर से ही संभव है। दूसरे शरीर धारी को यह सौभाग्य नहीं। इसलिए मनुष्य को अपने जीवन का अमूल्य उपयोग कर अपनी जीवात्मा तथा परब्रह्म परमात्मा में एकात्म देखना चाहिए। यही प्रभु से साक्षात्कार है।

- निवेदन -

प्रकाशन हेतु आर्य समाज कि गतिविधिया, लेख, भजन, कविता भेजे।

- संम्पादक

.....***.....

मूल शंकर और सच्चे शिव की तलाश

महर्षि दयानंन्द सरस्वती का जन्म सन् १२२४ को गुजरात प्रांत के टंकारा नामक स्थान पर हुआ था इनके पिता कर्सन लाल जी त्रिवेदी जमीदार थे तथा कट्टर शिव थे। महर्षि के बाल्यकाल का नाम मूल शंकर था।

मूल शंकर को पांच वर्ष का होने पर संस्कृत व्याकरण व संस्कृत भाषा की शिक्षा दी गयी आठ वर्ष का होने पर यज्ञोपवीत संस्कार किया गया। पिता शिव के अनन्य भक्त थे वह चाहते थे कि बालक मूलशंकर पिता की भांति शिव मंदिर में पूजा पाठ किया करे कई बार शिव के महात्म की कथा भी सुनाते थे मूल शंकर मै शिव की पूजा की ओर अमिरुचि होने लगी। सम्वत १८६४ माधवदी १४ को महाशिवरात्री का पर्व था जिसे शिव अति उत्साह से मनाते है। बालक मूल शंकर की भी व्रत रख कर इसे मनाने को उद्यत हुआ भक्त गण मंदिर मे पूजा अर्चना को आते रहे इसी प्रकार सायं हुयी फिर रात्रि हो गयी भक्त गण बैठे बैठे उंठने लगे और जब अर्ध रात्रि आयी सब सो गये परन्तु मूल शंकर नहीं सोया वह शिव मूर्ति की ओर देखता रहा।

अर्ध रात्रि को उसने अचानक जो दृश्य देख उसे देखकर वह आश्चर्य चकित रह गया उसने देखा कि कुछ भूषक एक एक कर शिव मूत्रि पर आकर उछल कूद कर नैवेद्य को खा रहे है मूल शंकर ने सोचा यह कैसा शिव है चूहों से अपनी रक्षा भी नही कर पा रहा है संसार की रक्षा कैसे करेगा उसने सोचा कुछ भी हो यह त्रिशूल चारी व पापियाँ का संहार करने वाला शिव नहीं हो हो सकता जो सबकी रक्षा करता है वह कोई और ही है।

मूल शंकर ने अपने पिता व अन्य पुजारियाँ से शंका का समाधान करना चाहा परन्तु संतुष्टि न मिली। इस दौरान दो घटना और घटी इनकी छोटी बहन की मृत्यु हो गयी। सब रुदन कर रहे थे मूल शंकर चुप खडा सोच रहा था कि मृत्यु क्या है एक दिन मृत्यु अवश्य होगी मेरी भी मृत्यु हो जायेगी तभी मूल शंकर के चाचा की मृत्यु हो गयी मृत्यु, से पर्न चाचा पास बुलाया फिर बहुत रोये मूल शंकर ने सोचा मृत्यु से बचने का उपाय क्या हैं इसलिये वह पुजारी साधु वर्यागियाँ से मिला मन में आया कि माया मोह मे रत रहने से कुछ न हो पायेगा अतः घर छोड दिया इधर उधर घूमता रहा एक दिन पिताजी ढूंढते हुये वहां आ आ गये पकड कर ले गये परंन्तु मूल शंकर ने तो मृत्यु पर विजय प्राप्ति का साधन ढूंढना ही था सो पुनः घर छोड दिया और फिर पुनः घर वापिस नहीं आया।

वह बालक मूल शंकर मठ आश्रम मंदिर पुजारियां योंगियाँ साधुओ के पास गया अनेक साधु मिले जिसमें अनेक तो झूठे ढोंगी और पाखंण्डी थे कुछ सच्चे भी थे मूल शंकर ने अपना नाम शुद्ध चैतन्य ब्रह्म चारी रख लिये तत् पश्चत नर्मदा के तट पैर स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से सन्यास की दीक्षा ले कर स्वामी दयानंद सरस्वती बने स्वामी जी अमज करते हूये मथुरा में पहुँचे जहां दण्डी स्वामी विरजानंद जी की कुटिया थी सन् १६६० से १६६३ तक दण्डी स्वामी से निघण्टु निरुमृ पाणिनी की अष्टाध्यायी वेद व वेदांगाँ की शिक्षा ली यहीं पर मूल शंकर को उस शिव का ज्ञान हुआ जो सत्य रुप में संसार की रक्षा करता है दुष्टों का संहार करता है वह ईश्वर कैसा है कैसा उसका स्वरुप है ऋषि दयानंद ने यहां यह सब जाना दुष्टों का संहार करने वाला वह नहीं जो मंदिर में मूर्ति वत्र पाषाज रुप में स्थित है अपितु वह है जो कण कण में व्यापक है सच्चिदयानंद स्वरुप है निराकार सर्व शक्ति मान है। दण्डी स्वामी ने दक्षिण रुप में क्या कि दयानंद लोंग ले कर आये थे दण्डी स्वामी ने कहा मै वही मागुंगा जो तेरे पास है।

दण्डी स्वामी ने मांगा देश का उपकार करो, सत्य शास्त्रों का उद्धार करो मत मतान्तरों की अविद्या को हटाओ और वैदिक धर्म का प्रचार करो।

महर्षि दयानंद सरस्वती ने आश्रम से विदा ले कर आगीवन गुरु के आदेशों का पालन किया वेद प्रचार किये, शास्त्रार्थ किये आर्य समाज स्थापित किये अनेक स्थानों पर तो ईट व पत्थर भी मारे गये विष भी दे दिया गया राजा कर्ण सिंह ने तो तलवार से वार करना चाहा था परन्तु वह ऋषि सोते हुए भारत को चिरनिंद्रा से जगा गया उसने कभी घटनाओं आपत्रियाँ से हार नही मानी अंध विश्वास पाखण्डों व कुरीतियाँ का विरोध किया जनता को जागृत किया महर्षि दयानंद सरस्वती ने एकेश्वर का प्रबल समर्थन किया संध्या व हवन करना उचित बताया श्राध्द व तर्पज मरे पीछे नहीं अपितु जीवित का करना चाहिए / मूर्ति पूजा अंध विश्वास है जो वेद मे कहीं भी नहीं है। स्वदेशी व स्वराज्य का सर्व प्रथम महर्षि ने उद्घोष किया था। उँच नीच जातिवाद हुआ दूत का विरोध करते थे। उन्होंने अंग्रेजी राज्य से पूर्ण सहायता प्राप्त मिशनारियाँ के विरुद्ध संस्कृत पाठशालाएँ खोली उस समय मिशनरियाँ जोर शोर से

हिन्दुयों का मत्रान्त्ररज कर रही थी। शुद्धि का आरंभ महर्षि ने किया। वैदों का भाष्य किया सत्यार्थ प्रकाश व अन्य ग्रंन्थ पत्र पत्रिकाएँ प्रकाशित कर समाज को अज्ञानता रुपी अन्धकार से निकाला पुराणों, जन्म पत्री का विरोध करते थे। अनेक देशी विदेशी लोग राजा रजवाडे वाले लोग उनके अनुयायी व शिष्य बन गये थे ऋषि दयानंद के उपकारों को हम कभी भुला नहीं सकते।

आज ऋषि की अमृत वाणी का प्रकाश विदेशों में भी हो रहा है दुनियां आज समझ रही है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।

- डॉ. निजोन्द्र पाल सिंह
चंद्रलोक कॉलोनी खुर्जा मो. ८९७९७९४७१५

.....***.....

धार्मिक और सामाजिक चेतना के महानायक : स्वामी दयानंद

ऋषि-मुनियों के काल से ऋषि दयानंद के कालखंड तक संम्पूर्ण भारत वर्ष परिवर्तन की बयार का ही इतिहास है। परिवर्तन के इस काल में दयानंद ने समाज में धार्मिक रुढिवादिता, साम्प्रदायिक कट्टरता तथा सामाजिक अत्याचारों से त्रस्त्र समाज को वैदिक धर्म आधारित संस्कृति के पालन करने का संदेश दिया। स्वामी दयानंद के रुप में भारतीय इतिहास में एक ऐसा युगपुरुष अवतारित हुआ जो देश के गौरवशाली अंतीत से प्रेरणा लेकर राष्ट्र समाज और धर्म के नव निर्माण की रुपरेखा निर्मित करता है।

दयानंद कालीन समाज सामाजिक जीवन, स्त्री और शूद्र-दशा तथा शिक्षा पद्धति की दृष्टि से इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। समाज वर्णो, जातियों एवं उपजातियों में विभाजित था। ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय के समान शूद्र भी दुरावस्था से युक्त भी पान, तंम्बाकु, आमोद-प्रमोद में उत्सव, पर्व, मेले, विभिन्न क्रिडाएं भी दृष्टिगोचर होती है। समाज मे भूत-प्रेत, तांश्रिक विद्या तथा ज्योतिष्य विद्या में विश्वास एवं ठगी का कुचक परम पर था। समाज में फैली तमाम विषमताओं एवं आउम्बरों के अंधेरे को चीटकर वैदिक धर्म की मान्यता को स्थापित करने का काम स्वामी दयानंद ने किया।

दयानंद - साहित्य से तत्कालीन भारत में प्रचालित विविध शिक्षा-पद्धतियाँ की जानने - समझने में काफी हद तक मदद प्राप्त होती है यह शिक्षा परम्परागत, साम्प्रदायिक, पाश्चात्य आदि भेद से कई प्रकार की हो दयानंद साहित्य के शिक्षा संबधी सन्द में ऐतिहासिक महत्व के है। इस कालखंड में दयानंद साहित्य से स्त्री विषयक विविध पहलुओं एवं दलित वर्ग की दयनीय स्थिति पर भी प्रकाश पडता हर बहु-विवाह, बाल-विवाह एवं सतीप्रथा इसकाल में साधारण बात भी। स्वामीजी ने अपने प्रवचनों द्वारा, समाचार पत्रों एवं साहित्य द्वारा इन कुप्रथाओं के बारे में समाज को जागृत करने को कार्य किया।

दयानंद कालीन भारत में धर्म की अनेक व्याख्यांए प्रचालित थी। अनेक महापुरुषों द्वारा काल और परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए व्याख्याएँ की थी। धर्म की ये अभिनव व्याख्याएँ अनेक सुधारक सम्प्रदायां के रुप में उपस्थित हुई। इनके फल स्वरुप नाना प्रकार के धर्म, मत, पंथ एवं सम्प्रदायों का स्वरुप सामने आया।

वेदेतर धर्मों में जैन, बौद्ध, देसाई तथा इस्लाम धर्म दयानंद- साहित्य में व्याख्यायित हुए है। दयानंद मूलतः एक धर्म संशोधक के रुप में जाने जाते है। धर्म-सुधार का आधार वेद और आर्ष साहित्य था। उस समय इस्लाम और ईसाई जैसे विदेशी धर्म राष्ट्रीय अस्मिता के लिए एक भयानक खतरा बने हुए थे। दयानंद प्राणप्रण से समकालीन धार्मिक समस्याओं को समाधान में जुट गए। अपनी वाणी और लेखनी द्वारा हर धर्म, हर सम्प्रदाय की विकृतियाँ को जन मानस के सामने रखकर अपूर्व साहस का परिचय दिया। दयानंद एक समाज-शोधक, एक राष्ट्र-निर्माता तो थे ही साथ ही वह एक विलक्षण धर्मोद्धारक भी थे। स्वामी दयानंद के दो महत्वपूर्ण कर्तों का उल्लेख हमेशा होता रहेगा कि पहला तो आर्य समाज की स्थापना, सम्पूर्ण मानव समाज कि हित के लिए और दूसरा मानव-मात्र के लिए वेदों को अध्ययन करने का अधिकार प्रदान करना।

– महेश चंद्र माथुर
श्री. भवानी लाल भारतीय ३/४ शंकर कॉलोनी-३ श्रीगंगानगर

.....***.....

विषय प्रवेश :

मित्र एवं मार्ग दर्शक प्रो. राजकुमार जी प्रायः अमेरिका जाते रहते हैं, क्योंकि उनके ज्येष्ठ पुत्र सहपरिवार वहीं प्रतिष्ठित पद पर कार्यरत हैं। कुछ वर्ष पूर्व जब वे अलीगढ वापस आये, तो उन्होंने मुझे अमेरिका की कुछ मुद्रायें उपहार में दीं। मुद्राओं को पाकर मुझे अपार हर्ष हुआ, किन्तु इससे भी अधिक आश्चर्य भी हुआ कि हर छोटी बडी मुद्रा पर अंकित था (इन गाड वी ट्रस्ट - हमें ईश्वर मं विश्वास है) एक अन्य वरिष्ठ प्रतिष्ठित प्रो. महेश्वराचार्य जी नियमित रुप से ६ महीने अमेरिका में अपनी पुत्री के परिवार के साथ, और ६ महिने अलीगढ हरदुआगंज स्थित अपने गीताश्रम में रहते हैं। जब वे यहाँ होते हैं तो उनके आश्रम पर यज्ञ-संत्संग की धूम मच जाती है। एक गोष्ठी में उनसे चर्चा हुई तो पता चला कि अमेरिका मे डालर पर तो प्रभु विश्वास के शब्द अंकित रहते हैं, किन्तु होता उसका उल्टा है। वहाँ व्यवहार में (आलमायटी गॉड-सर्वशक्तिमान ईश्वर) से बढकर (आलमायटी डालर-सर्वशक्तिमान डालर) की ही पूजा होती है। एक वरिष्ठ पत्रकार मान्य श्री वेदप्रताप वैदिक ने अमेरिका भ्रमण से लौटकर बताया कि न केवल अमेरिका नागरिक ही प्रत्युत प्रवासी भारतीय भी अब वहाँ विचलित हो रहे हैं, क्योंकि डॉलर तो हाथ में आ रहें है, किन्तु बच्चे हाथ से निकलने जा रहे हैं। कुल मिलाकर उनका चालचलन ऐसा बनता जा रहा हैं कि उनके माता पिता को लगता हैं कि यह तो आत्महत्या की स्थिति है। अभी कुछ वर्ष पूर्व ही कनाडा के प्रमुख नगर टोरेन्टों में लाखों डॉलर व्यय करके एक सांस्कृतिक केंद्र के उद्घाटन के लिए उपस्थित हुए श्री वासुदेव पाण्डेय ट्रीनाड टुबैगो एवं टोरन्टो सर्वत्र-विश्वएकनीडम् का नारा गुंजायमान करती प्रतीत होती है।

टंकारा में पायी चौदह वर्षीय बालक ने बोधचन्द्रिका :

गुजरात प्रान्त के मौरबी क्षेत्रस्थ ग्राम टंकारा में महाशिवरात्रि का पर्व आया। इस बार माघ कृष्ण चौदहवीं को वहां यह पर्व मनाया गया। पिता कर्शनजी ने अपने चौदह वर्षीय पुत्र मूल जी को शिव व्रत धारण एवं रात्रि जागरण कराया। पिता बालक को पग-पग पर धर्म धुरीण बनाना चाहते थे। अभी वह ५ वर्ष का भी नहीं हुआ था, कि उसको नागरी अक्षर, व मंत्र-श्लोक सिखा दिये। यज्ञोपवीत ८ वर्ष में कराके यजुर्वेद पढाना आरंभ कर दिया। १० वर्षे की आयु में उसे पूजा पाठ सिखाया। बालक रात्रि जागरण एवं व्रत धारण से बचना चाहता था-माता यशोदा अमृता बाई भी उसके पक्ष में थीं। पिता ने शिवपुराण की कथा सुना कर पुत्र को शिव दर्शन का प्रलाभन दिया और मूल जी इसके लिए उद्यत हो गये। रात्रि में सब सो गये मूल शंकर जागते रहे, उन्हें शिव दर्शन जो करने थे। फिर क्या था कि शिव पिण्डी पर चूहों ने उत्पात मचा दिया और पुत्र ने पिता को जगा दिया। प्रश्न पर प्रश्न करने लगा बालक-क्या यह वहीं महादेव हैं जो कथा में आपने बताये थे। बालक को डपटते हुए पिता ने कहा वह तो कैलाश पर्वत पर हैं यह तो उनकी पिण्डी मात्र हैं। अच्छा अब मैं घर जाता हूँ। कृष्ण पक्ष की चौदहवीं तिथि-धरती पर जहाँ चद्रिका नहीं थी-अमानिशा थी। मूल जी के हृदय में आज चंद्रिका फैल गयी थी उसे बोध हो गया था कि उसे सच्चे शिव की खोज करना हैं। दो वर्ष बाद उसे एक और बोध हुआ, वह बोध दिया उसकी १४ वर्ष की छोटी बहन ने। पडोस में सभी परिजन नृत्यागान में निमग्न थे कि जरासी सूचना पर सभी घर दौड पडे-विशचिका से बहन की मृत्यु हो गयी थी। सब रो रहे थे मूलजी कहीं खो गये थे। आज उन्हें बोध हुआ कि मृत्यु भी कोई सच्चाई है। प्यारे चाचा साथ खेलते लाड प्यार करते थे। तीन वर्ष बाद वे भी विशूचिका की भेंट हो गये। मृत्यु शैय्या पर चाचा जी ने मूल जी का हाथ पकड कर अपनी आखों से आसूओं की बरसात कर दी मूलजी उस में तरबतर हो गये। आज वे इनता रोये जितना न कभी पहले रोये थे और न बाद में। मूल जी के बाल जीवन का यह तीसरा बोध था-संसार। अब तो ईश्वर, मृत्यु एवं संसार पर विजय हेतु मूल जी में तीव्र वैराग्य उत्पन्न हो चुका था।

चौदहअयन–दक्षिणायन से उत्तरायन को पलायन:

प्रथम बोध के बाद सात वर्ष की अवधि में उत्तरायन एवं दक्षिणायन के चौदह अयन प्रकाश और अन्धकार के खेल खेलते हुए बीत गये। दक्षिणायन पर उत्तरायन की विजय हो गई। मूलजी के वैराग्य को राग में बदलने के उद्देश्य से उनके विवाह की तैयारी की गयी, जिसका उन्हें तब पता चला जब उनको विद्या गुरु के गृह से बुलाया गया। घर में घुसते ही सगे सम्बन्धियों की भीड गाने-बजाने के वातावरण ने उन्हें सतर्क कर दिया ओर २२ वर्ष की अवस्था में उन्होंने जो घर छोडा तो फिर लौटकर वापस नहीं आये। ब्रह्मचारी शुद्धचैतन्य और बाद मे सन्यासश्रम की दीक्षा लेकर स्वामी दयानंद सरस्वती बन गये। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने चौदह वर्ष का वनवास भोगा वे जंगल जंगल मारे फिरे ऋषि मुनि संत महात्माओं एवं मातृशक्ति का उद्धार किया, महावली राक्षस राजा रावण संहार किया। चौदह वर्ष बाद फिर अपने राजकुल में वापस आकर भरत मिलाप किया और राजसिंहासन पर आरुढ हुए। पाण्डवों ने भी चौदह वर्ष का ज्ञात अज्ञात बास भोगा और अन्त में अपने अधिकार के लिए महाभारत जैसे विश्व युद्ध का सामना किया और अपने राजकुल में आ गये।

स्वामी दयानंद ने भी चौदह वर्ष तक वन पर्वत-शिखर सरिता स्त्रोत भ्रमण के जीवन संघर्षो को झेलते हुए बिता दिये। अपनी ३६ वर्ष की अवस्था मे न वे अपने राजकुल में न पितृकुल में वापस लौटे । वे पितृ कुल से निकलकर चौदह वर्ष बाद अपने गुरुकुल मथुरा पहुचे । वर्ष की गहनतम् अन्धेरी कार्तिक अमावस्या के बाद शुक्ल पक्ष की द्वितीया को अपने गुरु विरजा नंद के पास पहुँच गये । शिव मस्तक का द्वितीयाकृत वक्र चंद्र आज दयानंद के मस्तिष्क की धरोहर बन गया था ।

चौदह वर्ष बाद चौदह समुल्लासः

गुरु विरजानंद यद्यपि नयनविहीन थे तथापि शास्त्र उनकी जिह्व पर नृत्य करते थे और उन्हें व्याकरण का सूर्य कहा जाता था । चंद्रमा मे सूर्य की ही तो ज्योति रहती है जिसकी ज्योत्सना द्वितीय से बढते बढते पूर्णिमा पर पहूँचती है । चंद्रिका जितनी अधिक होती उतनी ही अधिक शांत एवं शीतल भी होती है । दयानंद ने गुरु से लगभग ढाई से तीन वर्ष तक वेद एवं व्याकरण का ज्ञान प्राप्त किया और गुरु दक्षिणा स्वरुप स्वयं को ही गुरु आंकाक्षा में समर्पित कर देश-धर्म-मानव उद्धार के अभियान पर निकल पडे । चौदह वर्ष के अन्तराल पर सन् १८६४ में उनही भेंट राजा जय किशन दास डिप्टी कल्क्टर अलीगढ से हुई । वे उनके व्याखानों से बहुत प्रभावित हुए । सर सैय्यद अहमद खाँ से भी जहाँ उनकी भेट हुई । यहीं पर मुंबई से चल कर क्रांतिकारी पं.श्याम जी कृष्ण वर्मा उनसे मिलने आये, जिनको उन्होंने अपना धर्म-क्रांति दूत बनाकर इंगलंड भेजा था । उनके शास्त्रार्थ एवं संवादों के माध्यम से लोग अन्धविश्वासों को जिलांजलि देकर सत्य धर्म अपना रहे थे । राजा जय किशन दास ने स्वामी दयानंद से अपने उपदेशों को लेख बद्ध करने का अनुरोध किया ।

जिसको स्वीकार करके महर्षि ने एक विस्तृत ग्रंथ काशी में रहकर तैयार किया । इन दिनों राजा जय किशन दास अलीगढ से स्थानान्तरित होकर काशी एवं प्रयाग से आ गये थे । राजा जय किशन दास ने सन् १८७५ में यही गंथ सत्यार्थ प्रकाश अपने व्यय से छपाया था । बाद में स्वामी जी ने इसे नवलखामहल उदयपुर में संशोधित एवं परिवर्द्धित किया । वेद विधुरुपीं चौदहवी की चंद्रिका को समेटे हुऐ चौदह समुल्लासों के इस ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में न केवल हिंदु धर्म में, न केवल भारत में, प्रत्युत विश्व में एक क्रांतिकारी आंदोलन संचालित कर दिया जो सन् १८७५ में मुंबई में स्थापित प्रथम आर्य समाज से पहले ही प्रारंभ हो गया था, आज भी संचालित है आगे भी संचालित होता होगा ।

इटली के प्रसिद्ध वैज्ञानिक गैलीलियो ने बाइबिल की धारणा-सूर्य पृथ्वी के चारों और घूमता है के विरुद्ध जब यह निष्कर्ष निकाला कि पृथ्वी सूर्य के चारों और घूमती है और चंद्रमा के धरातल को उवड खाबड बताया तो पादरियों की कल्पना का स्वर्ग लोक धराशायी हो गया । सन् १६१६ में उन्हें लिखित रुप में चर्च द्वारा फतवा देकर उनके विचारों को प्रतिबन्धित किया । इस महान वैज्ञानिक की मृत्यु पर सार्वजनिक रुप से अन्त्येष्टि भी नही करने दी गई । एक शताब्दी बाद १७३६ में पोप ने उनकी समाधि सम्मान पूर्वक बनवायी । इसके एक शताब्दी बाद १८३५ में उनकी पुस्तकों पर से चर्च द्वारा प्रतिबंध हटाया गया और एक शताब्दी के कुछ अधिक बाद १८६५ में पोप पोल-६ ने गैलीलियों की कब्र पर जाकर सम्मान प्रकट किया । अन्ततः नवंबर १८८२ में गैलीलियौ के सिद्धान्त चर्च ने स्वीकार किये और अपनी गलती मान ली । इस श्रृंखला में ३६५ वर्ष लग गये, जबकि वेद मंत्रों में पूर्व से ही उन सिद्धांतो का वर्णन है जिन्हें महर्षि दयानंद ने अपने वेदभाष्य में स्पष्ट रुप से अंकित किया है ।

सत्यार्थ प्रकाश की सार्थकता इसके प्रकाशनकाल से अबतक निर्विवाद रुप से सिद्ध होती आई है । उस समय जो स्वामी दयानंद सरस्वती ने लिखा था उसे अब एक स्वर से समग्र बुद्धिजीवी जन स्वीकार कर रहें हैं । अमर उेाला १५ जनवरी २००० में ईसाई धर्म के प्रवर्तक देश ब्रिटेन में बी.बी.सी द्वारा एक सर्वेक्षण का उल्लेख है । जिसमें लगभग १०० गिरिजाघरों, रोमन कैथोलिक पादरियों समेत समाज के महत्वपूर्ण वर्ग के शिक्षक, पादरी, राजनेता, वैज्ञानिक, संपादक, समेत समाज के प्रबुद्ध व्यक्ति सम्मिलित थे । आदम व हौवा के अस्तित्व, भगवान ने दुनिया की रचना ६ दिन में की, ईसा का कुँवारी कन्या के गर्भ से जन्म लेना आदि बातों को बडी प्रतिशत में लोगों द्वारा कोरी कल्पना माना गया हैं । सर्वेक्षण-कार्यक्रम के संयोजक रॉडलिडिल ने अपने निष्कर्ष में स्वीकार किया कि इस से ईसा व बाईबल के प्रति लोगों की आस्था व विश्वास में कमी का पता तो लगता ही है । सत्यार्थ प्रकाश के चौदह समुल्लास महर्षि दयानंद सरस्वती ने विश्व मेधा के सागर मंन्थन से निकले १४ रत्नों के रुप मे प्रदान किये हैं । जो संसार के सभी क्षेत्रों में चौदहवीं की शुभ्रशान्त शीतल चन्द्रिका की भांति सर्व शांतिः शांतिरेव शांतिः सामा शांतिरेधि की रश्मियों को प्रसारित करने में सक्षम हैं । ईश्वर जीव, प्रकृति, परिवार, मानवोद्धार, विज्ञान, शिक्षा, राजनीति, नारीजागरण आदि के सभी क्षेत्रों में ऊँच-नीच भेदभाव घृणाद्वेष की कुत्सित भावनाओं का शमनकर कृण्वन्तों विश्वमार्यम् के उदात्त भावबोध जागृत करते हैं ।

.....***.....

परमैश्वर्यवान ईश्वर

विशंविशं मघवा पर्यशायत जनानां धेना अवचाकशद् वृषा ।
यस्याह शक्रः सवनेषु रण्यति स तीव्रैः सोमैः सहते पृतन्यतः ।।

ऋषिः– कृष्ण आग्डिरसः ।। देवता–इन्द्रः ।। छन्दः– जगती ।।

विनय–नारायण प्रभु प्रत्येक मनुष्य के हृदयकुटीकर में आकर लेए हैं, हम इसे जानते हों या न जानते हों। सबमें चुपके से लेटे हुए ये नारायण प्रत्येक मनुष्य की ज्ञानक्रियाओं को भी साक्षात देख रहे हैं, बल्कि उन ज्ञानक्रियाओं को अपने प्रकाश से प्रकाशित कर रहे हैं। ये नारायण हममें जागते तब हैं जब इन्हें अपने इस ज्ञान की, अपने श्रेष्ठ-से-श्रेष्ठ ज्ञान की, भेंट चढायी जावे, जब यह सोमरस इन्हें पिलाया जावे।सर्वश्रेष्ठ भक्ति और सर्वश्रेष्ठ सोमसवन तत्वज्ञान का निष्पादन ही है। भगवान इसी के भूखे हैं। इसी के लिए प्रत्येक के अन्दर बैठे उसकी ज्ञानक्रियाओं की निहार रहे है। प्रत्येक मनुष्य कुछ-न-कुछ अपना सोमसवन कर रहा है, प्रत्येक मनुष्य कभी-न-कभी विवेक करने, तत्वज्ञान के खोजने और ज्ञान का निष्कर्ष निकालने के लिए बाधित होते है अतः वे सबके अन्दर बैठ धैर्य से प्रतिक्षा कर रहे है। यह सच है कि जिसके अन्दर यथेच्छ सोमरस को पाकर वे भगवान जाग उठते हैं वह निहाल हो जाता है। उसमें ऐसा अद्भुत सामर्थ्य प्रकट होता है कि उसके सामने संसार की कोई भी भक्ति ठहर नहीं सकती। बस, देर यही है कि वे किसी के सोमस्वन को स्वीकार कर लेवें, किसी को अपना लेवें। जिसे वे अपना लेते हैं, वर लेते हैं उसके सामने तो वे अपने सम्पूर्ण सर्वसमर्थ रुप में, अपने सम्पूर्ण शक्र और वृषा रुप में प्रकट हो जाते हैं।

सचमुच ज्ञान की सर्वोच्च शक्ति है। ज्ञानी ही संसार के विकट-से-विकट पाप आक्रमणों को सह सकता है। ज्ञान के बिना शैतान की फौजों के सामने कोई नहीं ठहर सकताः प्रसंख्यान के सर्वश्रेष्ठ ज्ञान को भी प्रभु-अर्पण कर देने पर भक्त योगी को अपनी धर्ममेघ समाधि में जो सोम की वर्षा मिलती है उन तीव्र सोमों (उच्च ज्ञानों) के सामने शैतान की सैकडों आक्रमणकारी फौजें भी एक क्षण में परास्त हो जाती हैः सब पाप और क्लेश समाप्त हो जाते हैं।

शब्दार्थ–मघवा=परमैश्वर्यवान ईश्वर विशं विशम=प्रत्येक मनुष्य में घरि अशायत=लेटे हुए है, चुपके से व्यापे हुए है और वृषा=वे सुखवर्षक ईश्वर जनानाम=सब मनुष्यों की धेनाः=ज्ञानक्रियाओं को अवचाकशत=देख रहे हैं या प्रकाशित कर रहें हैं।अह=परन्तु शक्रः=ये सर्वशक्तिमान ईश्वर यस्य=जिसके सवनेषु=सवनों में, ज्ञान-निष्पादनों में रण्यति=रम जाते हैं, इन्हें स्वीकार कर लेते हैं सः=वह पुरुष तीव्रेः सोमैः=अपने इन तीव्र सोमों व्दारा, महाबली उच्च ज्ञानों व्दारा पृतन्यतः=सब आक्रमणकारियों को, बडे-से-बडे हमलों को सहते=सहता है, जीत लेता है।

साभार–वैदिक विनय से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

.....***.....

आर्य समाज, हंसापुरी ऋषी बोधोत्सव के अवसर पर
सभा मंत्री अशोक यादव द्वारा उद्‌बोधन

आर्य सेवक, नागपुर

प्रति, _____

_____

प्रकाशक : अशोक यादव, प्रबंधक संपादक एवं मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा
मध्यप्रदेश एवं विदर्भ, नागपुर फोन : ०७१२-२५९५५५६ द्वारा उक्त सभा के लिये प्रकाशित एवं प्रसारित
मुद्रक : फोन :